ज़िंदगी तेरे रंग हज़ार

प्रगति दत्त

ज़िंदगी तेरे रंग हज़ार

संपादन

प्रगति दत्त

साहित्य संगम बुक्स

ज़िंदगी तेरे रंग हज़ार

साझा काव्य संकलन

- संकलक : श्रीमती प्रगति दत्त।
- प्रकाशन : साहित्य संगम बुक्स।
- मुद्रण : नई दिल्ली।
- संस्करण : प्रथम, 2025।
- ISBN : 978-81-986491-2-6।

- © सर्वाधिकार सुरक्षित।

मूल्य : 350/-

साहित्य संगम बुक्स

आभार

प्रिय पाठकगण,
आपके समक्ष यह साझा संकलन प्रस्तुत करते हुए मेरा हृदय कृतज्ञता से आप्लावित है। इस कृति को साकार रूप देने में जिन-जिन महानुभावों ने अपने योगदान की सुगंध बिखेरी है, उनके प्रति मैं अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस यात्रा में सहयोगी रहे सभी सृजनशील मित्रों, प्रेरणास्रोत विद्वानों, तथा मार्गदर्शन करने वाले गुरुजनों के प्रति मेरा नमन। आपकी अंतर्दृष्टि, उत्साह और सहृदयता ने इस संकलन को एक सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धि में परिवर्तित किया है।

मेरे प्रिय परिजनों और आत्मीयजनों के प्रति भी मेरा हृदयतल से आभार, जिनकी अप्रतिम प्रेरणा और स्नेह ने मुझे इस रचना को पूर्णता तक पहुँचाने का साहस और सामर्थ्य दिया।

पाठकगण, आप सभी की उत्सुकता, रुचि, और समर्थन इस प्रयास की आत्मा है। मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ कि आपने इसे पढ़ने और सराहने का समय निकाला।

यह साझा संकलन केवल एक नहीं, बल्कि सामूहिक श्रम, विचारों और भावनाओं की परिणति है।आशा करता हूँ कि यह आपके हृदय को छूने और आपके विचारशीलता को प्रेरित करने में सफल हो।

आप सभी का हार्दिक आभार।

Amit Pathak's साहित्य संगम बुक्स

श्रीमती प्रगति दत्त
संकलक

भारत सरकार
Government of India
Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises

UDYAM REGISTRATION CERTIFICATE

- Udyam Reg. No. : UDYAM-JH-01-0024515
- Date of Udyam Reg. : 03/06/2023
- Name of Enterprise : SAHITYA SANGAM
- Social Category of Enterepreneur : General
- Type of Enterprise : Micro (During FY 2021-22 & Based on FY 2022-23)

NAME OF UNIT(S)
Sahitya Sangam Books
(Owned by : Amit Pathak)

OFFICAL ADDRESS OF ENTERPRISE
Flat/Door/Block No. 1004
Name of Premises/ Building : Staff Quarter Dhori
Village/Town : Phusro Block : Bermo
Road/Street/Lane : Near Dhori Pani Tanki City : Bokaro
State : JHARKHAND District : BOKARO , Pin : 825102
Mobile : 8935857296 Email : sahityasangambooks@gmail.com
Website : www.sahityasangambooks.in

भारत सरकार
Government of India
Goods and Service Tax

REGISTRATION CERTIFICATE

- Registration Number : 20CGKPP7865A1ZF
- Legal Name : Amit Pathak
- Trade Name, if any : Sahitya Sangam Books
- Jurisdictional Office : Tenughat
- Date of issue of Certificate : 11/11/2023

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of application granted on 11/11/2023 by the jurisdictional authority.

अस्वीकरण

यह संकलन विभिन्न लेखकों और कवियों की कल्पनाओं, अनुभवों, और विचारों का संग्रह है। इसमें व्यक्त की गई राय और भावनाएँ पूरी तरह से लेखकों की अपनी हैं और आवश्यक नहीं है कि वे संपादक, प्रकाशक, या अन्य संबंधित व्यक्तियों के दृष्टिकोण या मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हों।

इस पुस्तक में शामिल रचनाएँ साहित्यिक और रचनात्मक उद्देश्य से प्रस्तुत की गई हैं। यदि कोई सामग्री किसी पाठक को असुविधाजनक लगे या उनके विचारों से मेल न खाए, तो यह संयोगवश है और इसका उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह को साहित्यिक दृष्टि से देखें और इसे खुले मन से पढ़ें।

सादर
साहित्य संगम बुक्स

प्रतिलिप्याधिकार

यह काव्य संकलन विभिन्न कवियों की मौलिक रचनाओं का संग्रह है, जो उनकी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। संग्रह में शामिल सभी कविताएँ और सामग्रियों पर संबंधित कवियों और प्रकाशक का पूर्ण बौद्धिक अधिकार सुरक्षित है। इनका किसी भी रूप में पुनरुत्पादन, प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना लेखकों और प्रकाशक की लिखित अनुमति के सख्त निषिद्ध है। इस संग्रह का संकलन, संपादन, और प्रकाशन का कॉपीराइट साहित्य संगम बुक्स के पास सुरक्षित है। किसी भी प्रकार का अनाधिकृत उपयोग भारतीय कॉपीराइट अधिनियम, 1957 और अन्य प्रासंगिक कानूनों का उल्लंघन माना जाएगा, जिसके लिए कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह का उपयोग केवल निजी अध्ययन और साहित्यिक उद्देश्य से करें। यदि किसी भी सामग्री को उद्धृत या संदर्भित करना हो, तो लेखक और पुस्तक को उचित श्रेय देना अनिवार्य है। इस पुस्तक की कोई भी सामग्री व्यक्तिगत अध्ययन, शोध या समीक्षा के उद्देश्य से सीमित उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त कर सकती है, लेकिन व्यावसायिक उपयोग या वितरण के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक है।

इस पुस्तक का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। किसी भी सामग्री के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त करने के लिए कृपया नीचे दिए गए संपर्क विवरण पर संपर्क करें।

संपर्क:

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी, फुसरो, बोकारो

झारखंड – 825102

वेबसाईट : www.sahityasangambooks.in

ईमेल : sahityasangambooks2@gmail.com

अनुक्रमणिका

सहयोगी रचनाकार •••••••••••••••••••••••••••••••••••• पृष्ठ संख्या

1. श्रीमती प्रगति दत्त जी •• 9
2. श्री अमित पाठक शाकद्वीपी जी •• 14
3. सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव जी ••• 20
4. श्रीमती माधुरी सिंह जी•• 26
5. सुश्री पूनम निषाद जी ••• 31
6. प्रो. डॉ. विमल शर्मा जी ••• 36
7. श्रीमती हेमलता साहूकार जी •• 39
8. श्रीमती गीता टंडन जी ••• 42
9. डॉ. शैली छाबड़ा जी •• 47
10. श्रीमती नीना श्रीवास्तव जी ••• 52
11. श्री महेन्द्र कुमार मिठारवाल जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••••• 55
12. श्री राजेश कुमार बौद्ध जी •• 60
13. डॉ प्रीति चौबीसा जी •• 65
14. श्रीमती मीना जोशी "मनु" जी •• 70
15. कविता सिंह सृजना जी ••• 77
16. श्रीमती अलका त्यागी जी ••• 80
17. श्रीमती पूजा कुमारी जी •• 83
18. श्री रमापति मौर्य जी •• 86
19. श्रीमती सुनीता देवी मौर्य जी •• 99

सहयोगी रचनाकार

श्रीमती प्रगति दत्त

संकलक

अमित पाठक शाकद्वीपी

प्रकाशक

शरण्ये शारदे देवी चरण कमलं नमामिते !

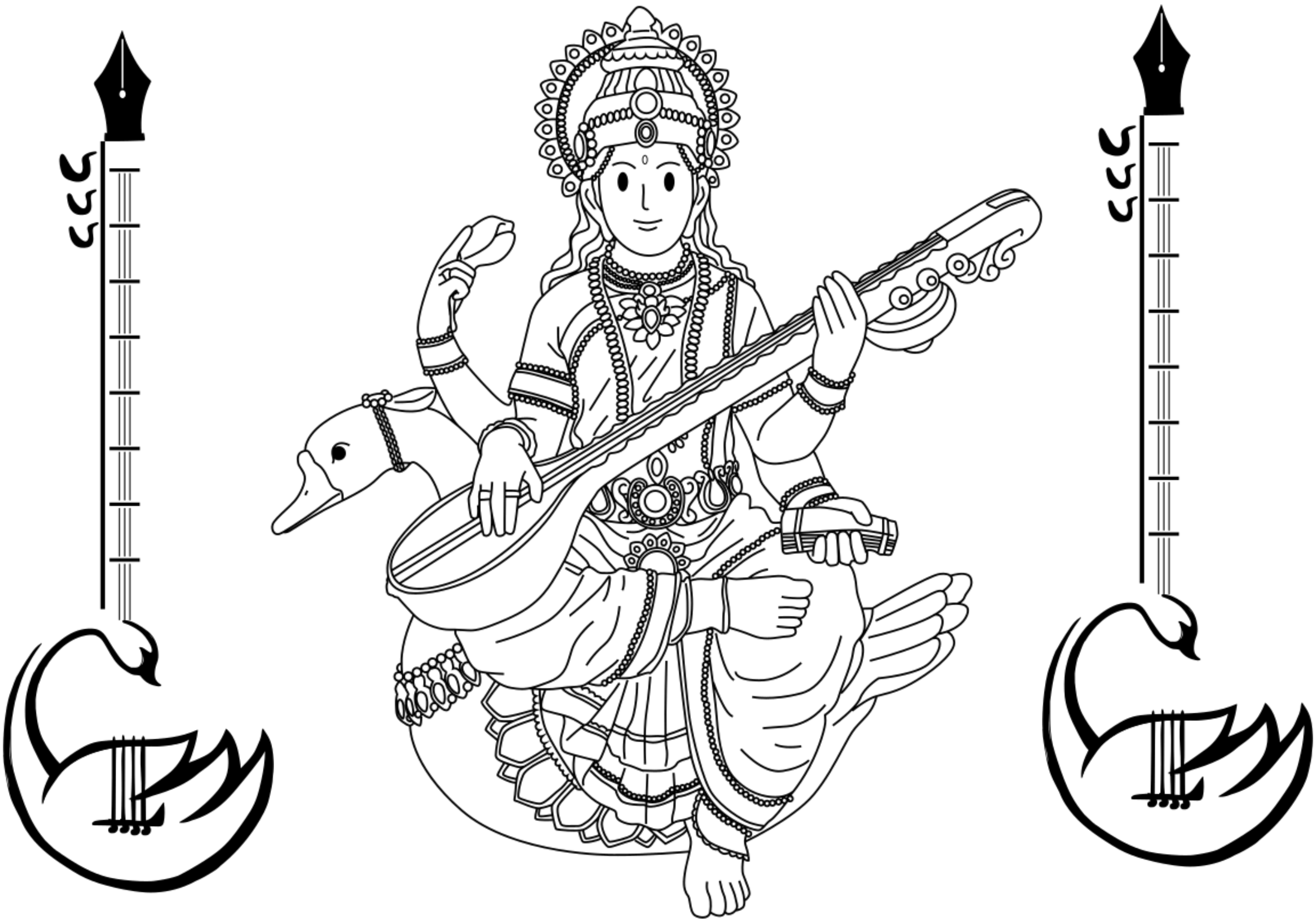

हे स्वर की देवी माँ वाणी में मधुरता दो।
हम गीत सुनाते हैं संगीत की शिक्षा दो।।

रचनाएं

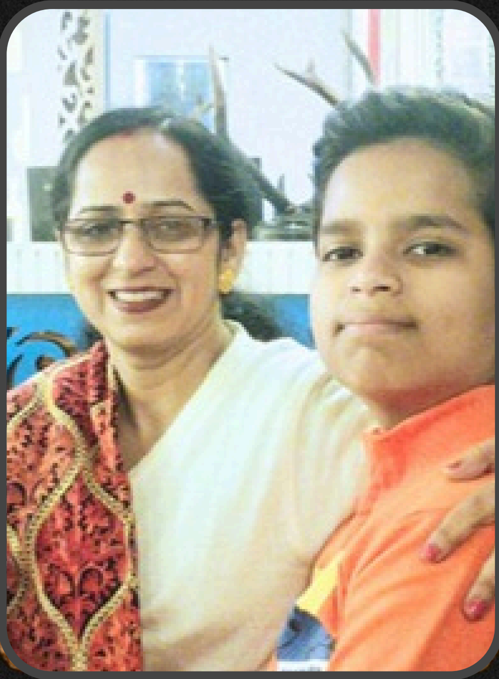

श्रीमती प्रगति दत्त

अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री राज बहादुर शर्मा।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती बाला शर्मा**।
- पति का नाम : **श्री आशीष दत्त।**
- अभिरुचि : **लेखन।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर**।
- पदनाम : **लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **कुछ** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **प्रगति की रचनाएँ।**
- **जीवन दर्पण।**
- **अंतस् की भावनाएं।**
- **शब्दों की महक (साझा संकलन)।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

ज़िन्दगी तेरे रंग हज़ार

ज़िन्दगी तेरे, रंग हज़ार ।
किसी में नफ़रत, किसी में प्यार ।।

कहीं है पतझड़, कहीं बहार ।
किसी में जीत, तो किसी में हार ।।

कहीं सुकून तो, कहीं तनाव ।
हर पल रंग बदलती ज़िन्दगी ।।

कभी सुख, देती बेशुमार ।
कभी कभी, खो जाते अपने ।।

कभी मिल जाते, बिछड़े यार ।
कभी किसी पर, करती प्रहार ।।

और कभी, देती उपहार ।
किन्तु ! तेरे दिन बस चार ।।

फिर चल जियें, खुशी से यार ।
भर दें तुझमें, प्यार ही प्यार ।।

© श्रीमती प्रगति दत्त

ज़िन्दगी चाहती है

ज़िन्दगी चाहती है कि,
सब उसे, खुलकर जीयें ।
होठों पर सदैव ही ,
मुस्कान को सीयें ।।

आंसूओं का कोई,
इसमें ना स्थान हो ।
हर तरफ हो खुशी,
सुखों का ही गान हो ।।

हंसी के ठहाकों से,
गूंजता जहान हो ।
प्यार ही प्यार
से भरा हर जहान हो।।

मन में हो शांति,
और बस संतोष हो ।
कोई किसी में भी,
ढूंढता ना दोष हो ।।

आपस में ना ईर्ष्या ,
ना कहीं घृणा रहे ।
एक दूसरे के लिए,
प्रेम बस बचा रहे ।

© श्रीमती प्रगति दत्त

अपने दुःख में डूब ना जाना

अपने दुःख में, डूब ना जाना ।
तैर के, हर दुख पार लगाना ।
छायेगा जब जब अंधियारा ।
आशा के तुम दीप जलाना ।
प्रेम विलुप्त जो हुआ जीवन से।
उसको पुनः तुम वापस लाना ।
अपने दुख में डूब ना जाना ।
तुमसे ही तो है ये ज़माना ।
हे नारी ! बिल्कुल ना घबराना ।
कह दो कि तुम रही अबला ना ।
छोड़ दिया नर से डर जाना ।
सीख गईं आईना दिखाना ।
अपने निर्णय ख़ुद ले पाना ।
सीख लिया है तुमने कमाना ।
अतः अब अपने दुःख में,
डूब ना जाना ।

© श्रीमती प्रगति दत्त

ज़िन्दगी ने कहा

ज़िन्दगी ने कहा,
भूल जा, जो सहा।
मैं सबको ,
एक बार ही मिलती।
मान तू, मेरा कहा।
ये पल फ़िर,
ना मिल पाएंगे।
इनका अभी, आनंद उठा।
चल मुझको, गले लगा।
और खुलकर, जिये जा।
हाँ बस यही ,
ज़िन्दगी ने कहा ।

© श्रीमती प्रगति दत्त

अमित पाठक शाकद्वीपी

गया जी, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **स्व. अरविन्द पाठक।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती अनुपमा पाठक**।
- अभिरुचि : **लेखन।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक (गणित)**।
- पदनाम : शिक्षक , पुरोहित, प्रकाशक, लेखक **एवं कवि**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **02** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- माँ का आँचल।
- सांवरे की बंसी।
- प्रीत की डोर।
- उनसे इश्क़ करके।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

ज़िन्दगी के मायने

चलिए, आज आपको
एक बोध कराता हूं,
क्या है सही मायने में जिंदगी ?,
शोध कराता हूं,

जिंदगी साथ है परिवार का,
अनुभव आपके व्यवहार का,
अवसर संबंधों से साक्षात्कार का,
प्रेम स्नेह संगी साथी यार का,

कभी कहीं सरस है जिंदगी,
तो कहीं सारे रस बेकार है,
कहीं उम्मीद से ज्यादा हासिल है किसी को,
तो कोई कहीं जिंदगी का तलबगार है।

कभी कहीं ये रेस है जिंदगी,
कभी कहीं बिल्कुल शिथिल है,
कभी जिम्मेदारियां ही जिंदगी हैं
कभी अधूरी ख्वाहिशें अखिल हैं।

कभी कहीं खुशियां जन्म से अनवरत मिल रही हैं,
कहीं किसी की जिंदगी आभावों में ढल रही हैं,
मेरे तुम्हारे समझ से परे जिंदगी तेज रफ़्तार कोई रेल है,
सही मायने में जिंदगी ईश्वर का खेल है।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

क्या बताऊँ ज़िन्दगी

क्या बताऊँ ज़िन्दगी को
कि कैसी ज़िन्दगी है,
आंखों में अश्क झिलमिल,
होठों पे बस हँसी है।

अधूरी ख्वाहिशों की
अम्बार हर घड़ी है,
क्या बताऊँ ज़िन्दगी को
कि कैसी ज़िन्दगी है।

कभी रेत सी है पिछली
हाथों में ही न आए,
कभी मिल के भी मिले न
कोई भी जतन लगाए।

बही जा रही बस
कोई ये नदी है,
ज़िन्दगी एक पल में
गुजरती सदी है।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

ओस की बूंद

जब कभी प्रेम के पर्ण
दिखने लगे,
ओस की बूंद सा,
मैं ठहर सा गया।

छू गई जब हवा,
पर्ण हिलने लगे,
गिर के जैसे धरा पे,
बिखर सा गया।

थी नमी खो गई,
खो गया मैं वहां,
हो गया जैसे गुम,
जाने क्या हो गया।

पल दो पल की रही
सारी खुशियां मेरी,
संग मन मीत के
क्षण भर सा रहा।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

बेपरवाह जिंदगी

कुछ यूं थी उन दिनों बेपरवाह जिंदगी,
हम थे मगन खुद में और साथ बस धूल मिट्टी गंदगी,
कुछ सोचने समझने का बहाना कहां था ?
उन दिनों खेल में व्यस्त ये सारा जहां था।

दोस्ती में तो जैसे सोने चांदी की चमक थी,
सारे रिश्ते थे सच्चे सबमें अनूठी महक थी,
तन पे एक भारी सा बस्ता लदा था,
पढ़ाई तो होती नहीं थी, जी बिलकुल ही गधा था।

दो रुपए मिलते थे दादा जी से मुझको,
गुल्लक में मिट्टी के सहेजा था जिसको,
वही अपनी थी पहली कमाई,
सुनहले से पल थे, थी खुशियां समाई।

वो बचपन की यादें वो मौसम सुहाना,
वो मस्ती मस्ती में दिन रात बिताना,
होली दिवाली की रौनक गजब थी,
बोली सबों की मीठी अजब थी।

अब तो ये वैसा जमाना नहीं है,
यार दोस्त तो हैं पर गहरा याराना नहीं है,
कभी जो तकलीफें थी जग को ज़ाहिर,
अब तो कुछ भी किसी को बताना नहीं है।

दुनियां हुईं है तेज इतनी,
बताई न आंकी जा सके जितनी,
बेपरवाह जिन्दगी लापरवाह हो गई है,
मस्तियां छूट गई तो दर्द आह हो गई है।

यकीनन कोई तो कहीं आस होगा,
वो गुजरा जमाना कभी पास होगा,
फिर से महक उन दिनों की जो होगी,
ए जिन्दगी तुम ऐसे कब साथ दोगी।

फिर से बिना बात बातें करेंगे,
सुकून के हवाले ये रातें करेंगे,
कभी इत्मीनान के दो लम्हे समेटे,
छोड़ कर ये भाग दौड़ पग धीमे धरेंगे।

अगर साथ चाहो तो आवाज़ देना,
साथ चलेंगे मगर साथ देना,
गम और खुशियां दोनों बांट लेंगे,
कुछ यूं फिर से वो यादें जिएंगे।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

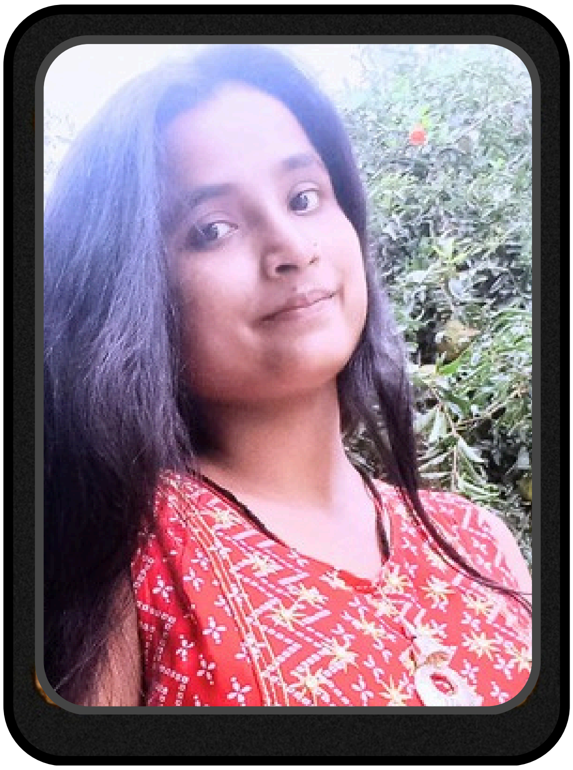

सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव

पूर्वी चम्पारण, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री संतोष श्रीवास्तव।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती अनिता श्रीवास्तव**।
- अभिरुचि : **लेखन, शिक्षण एवं फ़ैशन डिजाइनिंग।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (अध्ययनरत)**।
- पदनाम : **शिक्षिका, लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **कुछ** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

1 गीता का सार

2 मुसाफिर हैं हम तो

3 बेखौफ़ वो वीर जवान

4 प्रकृति तेरे रुप अनेक

5 हिन्दी हमारी मातृभाषा

6 दहेज भगाओ बेटियाँ बचाओ

7 छू लूँ मैं आसमां

8 जुनून प्यार की एक अलग सीमा

9 होली का रंग

10 भारत का रत्न रतन टाटा

11 उनसे इश्क करके भाग २

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

एक मुलाकात जिंदगी से

मैंने पूछा जिंदगी से एक दिन,
रोज करती है, मुझे हैरान क्यों?
क्यों परखती है, मुझे तु रात-दिन ।
मेरी खुशियों से, तु परेशान क्यों?

हँस के बोली जिंदगी, पगली है तु,
रहती है उदास सी, हँसती न क्यूँ?
परखना तुझको, मेरा इरादा नहीं।
हरहाल में खुश रह, कर वादा अभी ।

मैंने कहा जिंदगी झूठी है तु,
उलझनों में बीतता हर पल ये क्यों?
दिल में दबी ख्वाहिशें घुटती मेरे,
रुबरु होने का एक मौका तो दे।

अनगिनत भवरें बनाती चल रही,
चाँद सी दिखती कभी सूरज सी तु
रुबरु होकर जूझे जाना है ये,
जैसे अल्लादीन का चिराग तु ।

© पल्लवी श्रीवास्तव

कैसी है ज़िंदगी?

जब हम खुश हैं,
तब बहुत प्यारी है जिंदगी
जब हम उदास रहे,
तब दु:ख भरी है जिंदगी ।

जब कुछ अच्छा लगे,
तब रंगीन है जिंदगी
जब मन सोच में डूबा रहे,
तब बहुत गहरी है जिंदगी।

जब कठिनाईयाँ सामने आएं
तब मुश्किल भरी है जिंदगी ,
जब सपने साकार हो जाएं
तब सार्थक है जिंदगी।

जब दिल टूट जाए
तब गमों से घिरी है जिंदगी
अपनों के लिए कुछ
कर गुजरने की चाहत है जिंदगी ।

सच पूछो तो परिस्थिति के सांचे में
खुद को ढ़ालना है जिंदगी ।
कुछ ऐसी है ज़िंदगी।।

© पल्लवी श्रीवास्तव

जिदंगी तेरे कई रंग

ऐ जिंदगी बहुत खूबसूरत हो तुम,
बेवजह यूंही बर्बाद किया तुम्हें
यूंही जाने दिया तुझे जिए बिना
ही खुदसे दूर।

तुझे जीना है अच्छे से,
तेरे हर पल को महसूस करना है
तेरे रंग हैं कितने,
तेरे हर रंग में मुझे रंगना है।

तेरे हर गम और खुशी का भागीदार मुझको बनना है,
तुझसे हर खेल के दांव पेंचे सीखना है दुनियां का
तेरे हर मौसम का आनंद मुझे लेना है।

तेरे हर चुनौतियों का सामना करना है मुझे,
तेरे हर खुशियों को आपस में बांटना है
तेरे हर गम को गले से लगाना है,
तेरे हर उम्मीद को मजबूत हौंसला देना है।

तुझे औरों से बेहतर बनाना है,
होने नहीं देंगे तुमको व्यर्थ कभी
एक सर्वोत्तम मायने तुझे देना हैं।

© पल्लवी श्रीवास्तव

ज़िंदगी?

जिंदगी प्रतियोगिता नहीं,
हर पल तुलना करते रहें एक दूजे से,
सबके अपनें अपने गुण,
कोई जमीन से फसल उगाए ।

कोई समुद्र से मोती ढूंढे,
कोई आसमान की खोज खबर ले,
सब अपनी जगह महत्वपूर्ण ।

जिंदगी जंग नहीं,
लड़ते रहें बात बात पर,
कभी मौन रहकर लड़ाई को टालें,
कभी हंस कर ।

जिंदगी श्रेष्ठ नहीं,
सब अच्छा ही अच्छा मिले,
जो मिला है उसी को अच्छा मानिए ।

जिंदगी खुशियों का बाजार नहीं,
जहां खुशियां ही खुशियां हों,
यहां धोखा दुःख सब मिलता है,
सहने की ताकत होनी चाहिए,
सब आसान है।

यहां रोओगे तो जिंदगी दुःखो का सागर है,
यहां हंसोगे तो खुशियां ही खुशियां
जैसा मन वैसा जीवन ।

© पल्लवी श्रीवास्तव

जिंदगी का फर्ज़

आहिस्ता चल जिंदगी,
अभी कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है ,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है ।

रफ़्तार में तेरे चलने से ,
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए
रूठों को मनाना बाकी है ,
रोतों को हँसाना बाकी है ।

कुछ रिश्ते बनकर ,
टूट गए कुछ जुड़ते -जुड़ते छूट गए ,
उन टूटे -छूटे रिश्तों के ,
जख्मों को मिटाना बाकी है ।

कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं ,
कुछ काम भी और जरूरी हैं ,
जीवन की उलझ पहेली को ,
पूरा सुलझाना बाकी है ।

जब साँसों को थम जाना है,
फिर क्या खोना ,
क्या पाना है ,
पर मन के जिद्दी बच्चे को
यह बात बताना बाकी है ।

आहिस्ता चल जिंदगी ,
अभी कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

© पल्लवी श्रीवास्तव

श्रीमती माधुरी सिंह

पटना, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री राम प्रसाद वर्मा।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती रमुना देवी**।
- पति का नाम : **श्री उज्ज्वल सिंह।**
- अभिरुचि : **लेखन और शिक्षण।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, एम एड एवं नेट**।
- पदनाम : **शिक्षिका, लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **१०** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

1. **किस्मत का इंतजार।**
2. **मातृ दिवस।**
3. **भारत की नारी।**
4. **प्रेम शाश्वत।**
5. **पीहर और बेटियां।**
6. **आधुनिक नारी।**
7. **प्रेम और कर्तव्य।**
8. **अखंड सुहाग।**
9. **प्रेम मंदाकिनी।**
10. **पिता की यादें**
11. **पर्यावरण.... इत्यादि।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

रंग बिरंगी जिंदगी

जिंदगी है रंग बिरंगी, इसमें है रंग हजार।
उतार चढ़ाव जीवन में आते रहते अपार।।

इनसे घबराकर नहीं डर जाना, मुकाबला करना बेशुमार।
जो करता है इससे दोस्ती, उसके पास रंग हजार।।
जिंदगी है रंग बिरंगी, इसमें है रंग हजार।
उतार चढ़ाव जीवन में आते रहते अपार।।

जिंदगी के अलग-अलग कई रंग है।
थोड़े में भी खुश है, कोई ज्यादा में भी तंग है।
जिंदगी माता-पिता का पुण्य है, भाई बहन का प्यार है।
जिंदगी हमसफर का साथ है बच्चों का अरमान है।

कभी जिंदगी निशा सी काली स्याही है।
कभी जिंदगी इंद्रधनुषी रौनक लेकर आई है।
एक शख्स के बिना कभी जिंदगी अधूरी हो जाती है।
कभी किसी के मिलने से खुशियाँ दुगनी हो जाती है।

जिंदगी कभी रेगिस्तान की धूप है,
तो मीठी बारिश है कभी।
जिंदगी कभी स्थिर पानी सी है,
तो समुद्र की लहरों सी है कभी।

जिंदगी अनकहे किस्सों की किताब है,
कभी हंसाती तो कभी रुलाती है।
जिंदगी में खुशियाँ बेहिसाब है,
कभी ढूंढो तो गम में भी स्वर्ग दिलाती है।

इस गणित की जिंदगी को तुम मत जाना हार।
जिंदगी है रंग बिरंगी, इसमें है रंग हजार।
जिंदगी है रंग बिरंगी, इसमें है रंग हजार।।

© माधुरी सिंह

जिंदगी का सफर

जिंदगी सूर्योदय से शुरू होती है,
जिंदगी सूर्यास्त सी समाप्त होती है।

कभी जिंदगी के सफर में मिलते सावन और बसंत,
कभी पतझड़ सा जीवन का होता अंत।

जरूरी नहीं की जीवन से, अंत तक मंजिल मिल जाए,
जिंदगी के सफर में जो मिले, उसी का आनंद लिया जाए।

जिंदगी में मंजिल मिल ही जाएगी, थोड़ा तो हौसला रख,
लोग मिलेंगे बिछड़ जाएंगे, सिर्फ अपने पर भरोसा रख।

जिंदगी ले चल मुझे जहाँ हमसफर है मेरा,
ये अजनबी राहें अंतिम सफर हो तेरा।

कभी देखो इस जिंदगी को, कितनी रंगीन है।
हमसफर के साथ, हर सफर ही हसीन है।

सफर में धूप है तो हमसफ़र का छाया है।
जिंदगी का सफर अपने आप में मोह माया है।

जिंदगी की तरह यह दुनिया भी इंद्रधनुष सी होती है।
जिंदगी सूर्योदय से शुरू होती है।
जिंदगी सूर्यास्त सी समाप्त होती है।।

© माधुरी सिंह

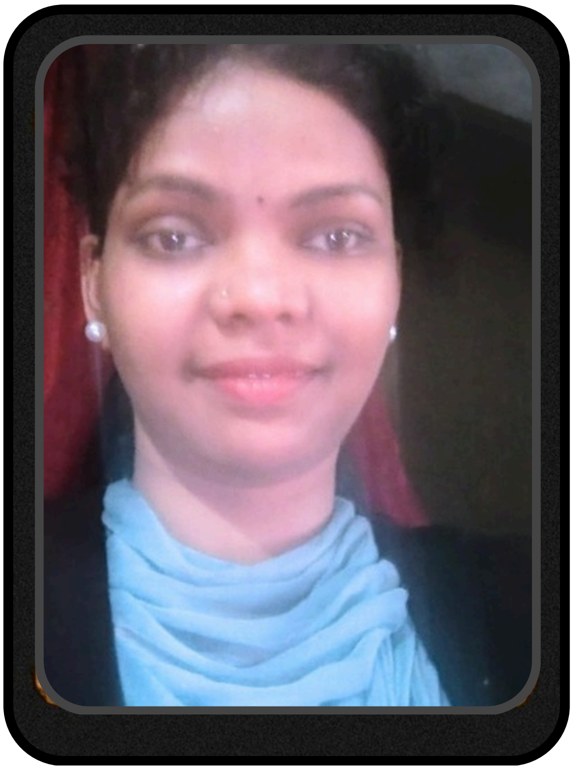

सुश्री पूनम निषाद

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री केदार नाथ निषाद।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती शकुन्तला देवी**।
- अभिरुचि : **सामाजिक कार्य, लेखन और शिक्षण।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, बी. एड. एवं नेट उत्तीर्ण**।
- पदनाम : **बीपीएससी शिक्षिका (मध्य विद्यालय, जलालपुर, कुचाय कोट, गोपालगंज, बिहार)**, **लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **१५** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **ऑपरेशन सिंदू**र : बिहार कथा समाचार पत्र ।
- **ओजस्वी पत्रिका**, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश में **केकड़ा स्वभाव** और **दुखी मत रहो** लेख एवं विविध रचनाएं प्रकाशित।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

आखिर क्यों ?

मैंने ईश्वर से रुप माँगा,
पर उसने मुझे गुणवान बनाया।
ताकि लोंगो की प्रेरणा बन सकूँ।

रेशमी लम्बे सीधे केश माँगा,
पर उसने घूँघराले दिया।
ताकि जीवन के संघर्ष समझ सकूँ।

मैंने मौज-मस्ती माँगा,
पर उसने मुझे दुःखभरी जीवन दिया।
ताकि लोंगो का दर्द समझ सकूँ।

मैंने माँ का प्यार, दुलार माँगा,
पर उसे छीन कुछ एहसास और यादें दिया।
ताकि अपनी कलम की ताकत बना सकूँ।

मैंने बचपन की रौनक माँगा,
पर उसने मुझे जिम्मेदारीयों का बोझ दिया।
ताकि माँ-बाप, भाई-बहन का दर्द समझ सकूँ।

मैंने फूल सा कोमल जीवन का राह माँगा,
पर उसने मुझे काँटों से भरा संघर्ष दिया।
ताकि आसान रास्ते बना सकूँ।

मैंने, प्रेम दुलार, इश्क माँगा,
पर उसने मुझे धोखा, फरेब, दर्द दिया।
ताकि लोंगो के दोहरे चरित्र को पहचान सकूँ।

मैंने झूठ, फरेब, चालाकी, मक्कारी माँगा,
पर उसने मुझे, नादान, मासूम, अनाड़ी बनाया।
ताकि ईश्वर की कृपा पा सकूँ।

मैंने सहारा, आशा, उम्मीद माँगा,
पर उसने मुझे आत्मनिर्भर बनाया।
ताकि औरो की प्रेरणा, सहारा बन सकूँ।

आखिर क्यूँ? मुझे हर वो चीज नहीं मिला,
जो हमने माँगा था।
जवाब आया....
ताकि मैं बेहतर इंसान बन इतिहास रच सकूँ।

© पूनम निषाद

ज़िंदगी के रंग में हम

जिंदगी के रंग में हम खोये, बैठें थें अनिद्ध उपवन में।
थें डूबें गहरी सोंच में, मन में संजोये हज़ारो सपने।

चाहुओर थी हरियाली और सुहृदय लोंग।
न मन में छल, भय, फ़रेब ना ही थी मक्कारी।

मंद-मंद मुस्कायी, जिंदगी के रंग थें बड़े निराले।
छिन्नोतर हुए दीवास्वप्न से हम.........

जहाँ प्रेम हैं वहाँ नफ़रत पनपे, पतझड़ हैं तो क्या बसन्त पीछे।
लगा हैं मानव होड़ में अपने हार जीत के।

क्या भूल गया तू, ईश का कठपुतली हैं बन्दे।
किसी को दर्द देकर होता खुश, हे। खलु मानुष।

एक खुशी मिले, तो हज़ारो ग़म खड़े मिलें।
एक जीत मिलें तो, लाखों हार छिपे।

एक मुस्कान के पीछे, हज़ारो ग़म फ़िके।
कहीं भोजन सड़े तो, कहीं गरीब भूखे पड़े।

पैसो की बोलबाला ने तो, रिश्तों का कद्र किया छोटा।
दूसरों को खुश रखने में, भूल गयें अपना कीमत ।

जिंदगी में सीखा दिया हमें, बनना स्वप्रेमी।
जिसके हृदय में हैं गर सच्चा प्रेम, विश्वास, और सादा जीवन।

आज का युवा उसे हल्का दिमाग, या पागल गवार समझता।
सच हैं ऐं जिंदगी! तेरे रंग हज़ार, स्वीकार करतें हैं हम बारम्बार।

– पूनम निषाद

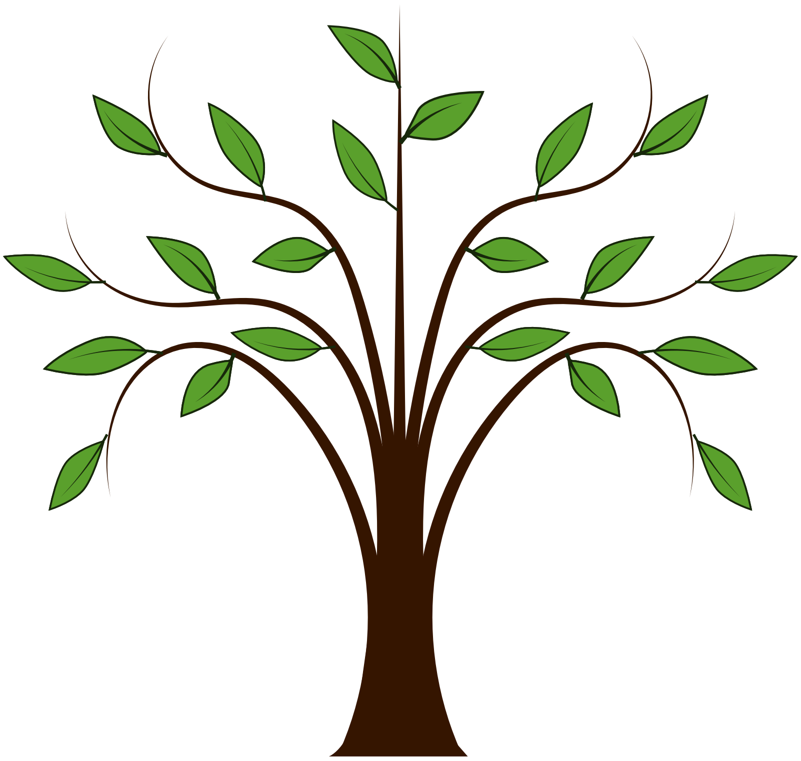

प्रो. डॉ. विमल शर्मा

उदयपुर, राजस्थान

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **स्व. सुन्दर लाल शर्मा ।**
- माता जी का नाम : **स्व. सुशीला शर्मा**।
- अभिरुचि : **सामाजिक कार्य, लेखन और शिक्षण।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पती**।
- पदनाम : **प्रोफेसर, विश्वविद्यालय शिक्षक, लेखक एवं कवि ।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीवन का क्षितिज

पिता पुत्र की अंगुली थामे,
पग पग दोनों चलते जाते।
क्षितिज में वो रंग दिखाते,
जिनमें सपने, अपने सजाते।

नीला नभ है आस भरोसे,
सूरज भरता कर्म का जोश।
बोल उठे पिता धीमे स्वर में –
"बेटा! जोश में ना खोना होश।"

"लाल रंग संघर्ष का प्यारा,
पीला रंग विजय हमारा,
हरियाली संतोष का चिन्ह -
नीला विस्तार, खुला सहारा।"

"जहाँ क्षितिज नभ से मिलता है,
वहीं जीवन दृष्टि पलता है,
हौसले की नन्ही कश्ती में,
सपनों का सागर चलता है।"

बेटा बोला – "क्या सब सच है?"
पिता मुस्काए - गागर में सागर है! ,
तू चल, समझेगा खुद रंगों को -
जीवन यही, यही सच है।"

अंगुली थामे, पग धरते हैं,
रंगों के मतलब पढ़ते हैं,
क्षितिज न कोई दूर दिखे अब –
पिता–पुत्र जब संग चलते है

– प्रो. विमल शर्मा

विश्वास की डोरी

पति-पत्नी हों या हो कोई नाता,
बिना भरोसे हर बंधन टूट जाता।
मिट्टी में भी सोना खिल जाए,
अगर विश्वास से कोई साथ निभाए।

नज़रों से नहीं, दिल से जुड़ते हैं रिश्ते,
झूठ से नहीं, सच्चाई से सजते हैं रिश्ते।
जहाँ हो शक की छाया, वहाँ प्रेम मुरझाता है,
और जहाँ हो यकीन, वहाँ जीवन मुस्काता है।

वो साथ खाना हो या साथ चलना,
सुख-दुख में एक दूजे पर पल-पल भरोसा रखना।
पति-पत्नी तो जीवन के दो पहिए हैं,
चलते हैं तभी जब एक-दूजे पर सही नज़रिया लिए हैं।

माँ-बेटी, भाई-बहन, या दोस्ती की बात हो,
हर रिश्ते में विश्वास ही असली सौगात हो।
सपनों की इमारत खड़ी हो सकती है,
अगर नींव में भरोसे की ईंट सजी हो सच्ची।

रिश्ते नहीं बनते बस कहने-सुनने से,
ये सँवरते हैं समर्पण और समझने से।
पल दो पल का साथ नहीं, उम्रभर का है ये सार,
विश्वास ही देता है हर रिश्ते को आकार।

– प्रो. विमल शर्मा

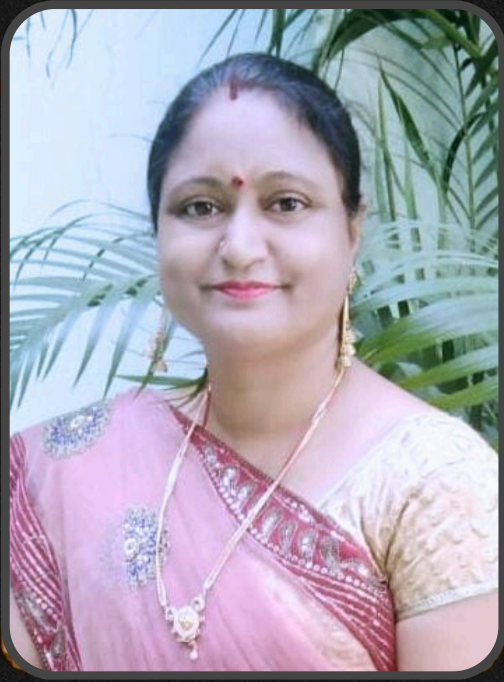

श्रीमती हेमलता साहूकार

कुरूद, छत्तीसगढ़

प्रकाशित कृतियाँ

- **बचपन के खेल निराले।**
- **कस्तूरी सुगन्ध।**
- **कुछ लम्हें ऐसे भी ।**
- **अलबेली चाय।**
- **मन की बात।**

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री प्यारे लाल साहू।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती गोदावरी साहू**।
- पति का नाम : **श्री साहूकार साहू।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक, बी. एड. एवं पीजीडीसीए।**
- पदनाम : **शिक्षिका , लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **३** वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

ज़िन्दगी का साथ

जिंदगी मेरा साथ दे
हाथों में अपना हाथ दे,
रुकूँ न कभी,
जीवन के किसी भी मोड़ पर।

इस जहां में अपनी,
कुछ अलग पहचान बना सकूँ,
ऐसी कुछ सौगात दे,
जिंदगी मेरा साथ दे।

खुद खुश रहकर,
सबको खुशियां दे पाऊं,
हँसकर बिताऊँ हर पल
अपनों के संग,

जीवन में आने वाले
हर समस्या का समाधान
मैं निकाल सकूँ
ऐसी कुछ औकात दे।

जिंदगी मेरा साथ दे,
हाथों में अपना हाथ दे।।

– हेमलता साहूकार

अब तुमको आना होगा

हर बार मैं आयी तेरे दर पर
अब तुमको आना होगा ,
तेरा मेरा जो रिश्ता है
वो अब तुम्हें निभाना होगा।

मैं भक्त हूँ तुम हो भगवान
अब तो रख लो मेरा मान,
प्रीत तुमसे ही लगाई मैंने
इस प्रीत की लाज बचाना होगा।

थक गयी हूँ मैं इस जीवन में
संघर्ष करते-करते
अब तुमको ही मेरा
हिम्मत बढ़ाना होगा।

मेरी जीवन नैया फँसी है मंझदार
खिवैया बन तुम्हें ही पार लगाना होगा।

तुमने कहा था तुम साथ हो मेरे
तो हर जगह होगी मेरी जीत
अब आकर तुम्हें अपना वचन निभाना होगा,
अब तुमको आना होगा।

- हेमलता साहूकार

श्रीमती गीता टंडन

मुंबई, महाराष्ट्र

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **स्व. श्री मेवालाल मौर्य।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती मूरत देवी मौर्य**।
- पति का नाम : **श्री अमित टंडन।**
- शैक्षणिक योग्यता : **एम.ए., एम. एड., एम. फ़िल. (हिंदी)।**
- पदनाम : **प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका , लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **२०** वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

प्रकाशित कृतियाँ

- 2021- उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान द्वारा प्रकाशित "**मन के शब्दों की गुल्लक**" कविता संग्रह का लोकार्पण महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री भगतसिंह कोशियारी जी के हाथों राजभवन में हुआ |
- 2024- "हिंदी साहित्य सेवा सम्मान" नागरी लिपि परिषद् , नई दिल्ली द्वारा " **हिंदी हैं हम**" अंतरराष्ट्रीय साझा काव्य संकलन में रचना प्रकाशित हुई|
- 2025- "माँ शारदा साहित्य सेवी सम्मान" नागरी लिपि परिषद् , नई दिल्ली की "**हे शारदे माँ**" साझा काव्य संकलन में रचना प्रकाशित हुई |
- 2025- काव्य-कौस्तुभ सम्मान – '**अव्याहत**' साझा काव्य संकलन – 'वाङ्मय कला संगम' द्वारा प्रकाशित साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित हुईं |

ज़िन्दगी

ज़िंदगी
मैंने देखा है तुझे
धरती की कोख से
अंकुरित होते हुए
माँ की गोद में खेलते हुए
खिलते और मुस्कुराते हुए
हारते और लड़खड़ाते हुए
गिरते और संभलते हुए
ज़िंदगी देखा है तुझमें
भूख और प्यास भी
कभी बहुत हताश भी
और जीने की आस भी
कभी खुश कभी उदास भी
कभी सृजन और विनाश भी
ज़िंदगी तूने लिए है
अनुभवों के कई स्वरूप
कभी छाँव कभी धूप
रिश्तों के कितने रूप
तू कभी जाती है रूठ
कभी सच कभी झूठ
ज़िंदगी! फिर
तू बदल लेती है अपना रंग
न आया समझ में मेरी
कभी तेरा ये ढंग...

– गीता टंडन

कुछ यूँ है ज़िन्दगी

यहाँ न कोई छोटा न बड़ा, नहीं कोई एक समान।
अपने अपने कर्म से हर कोई पाए मान-सम्मान।।

कंकड़-कंकड़ जोड़कर बन जाए पहाड़।
कण-कण में भी बसा ताड़ सके तो ताड़।।

कदम-कदम चलकर ही मंज़िल होती पास।
लम्बा रास्ता देखकर मत हो जाना उदास।।

फूल-फूल से रस लेकर आती है मधुमक्खी।
कभी न माने हार वह, धुन की अपनी पक्की।।

नन्हें-नन्हें तारों से जब भर जाता आकाश।
अमावस की रात को भी बना देता है ख़ास।।

एकदम नन्हा सा बीज भी बन जाता बड़ा वृक्ष।
न मानो किसी को छोटा और न समझो तुच्छ।।

– गीता टंडन

सूरज की किरण सी है ज़िंदगी

ज़िंदगी तू आती है
भोर के संग
हौले-हौले
सुबह की नज़ाकत
गुलाबी आसमान पर
फैलती हैं जिस तरह
तू भी कभी लगती है
उसी तरह...
कभी तेज़ किरणों के धार
आँखें चौंधियानेवाली मार
तू सही नहीं जाती
तू होती है जितनी पास
बन जाती है उतनी दूरी
जैसे तुझे सहना
होती है मज़बूरी
कभी ढलती शाम को
जब तेरी रंगीन किरणों की
संगत पाकर मन खुश हो
तुझे निहारता है
जैसे दिनभर की
सारी थकान उतर जाती है
जब तू तारों की तरह
जीवन की रातों में
टिमटिमाती है...

– गीता टंडन

तू ही तो है ज़िंदगी

तू बच्चों की मुस्कान में
खिलते हुए फूलों में
बहती हवाओं में
नदी के बहाव में
तू ही तो है
दादी के हथेलियों और
माथे की सलवटों में
प्रेमी और प्रेमिका के
रातों की करवटों में
पिता की चिंता में
और माँ के दुलार में
धूप की तपिश और
बारिश की बौछार में
तू ही तो है
बच्चों की हँसी और
जवानी के जुनून में
जिम्मेदारियों के बोझ में
बेपरवाही के सुकून में
तू बूढ़ों की दवाई में
और मृत्यु के आराम में
ज़िंदगी तू ही तो
जीवन के हर काम में...

– गीता टंडन

डॉ. शैली छाबड़ा

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री जे. पी. कुमार।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती वर्षा कुमार।**
- पति का नाम : **श्री मुकेश छाबड़ा।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं बी. एड.।**
- पदनाम : **सहायक अध्यापिका , लेखिका एवं कवयित्री।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत 05 वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **सुहाना बचपन।**
- **सोशल मडिया।**
- **अध्यापक की भूमिका।**
- **जीवन की सार : माँ।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

बनावट सी जिंदगी

आज जिंदगी में कुछ बनावट सी हो गई है,
दिल में उदासी और चेहरे पे खुशी
अब तो बस जिंदगी कुछ
सजावट सी हो गई है।

मन की बातें कहने और सुनने की आदत
ना जाने कहाँ चली गई,
अब तो बस हर रिश्ते में कुछ मिलावट सी हो गई है।

आगे बढ़ने की होड़ लगी है,
ना जाने कौन साथ है और कौन पीछे छूटा,
अब तो बस चलते-चलते कुछ थकावट सी हो गई है।

ना जाने खुशी है या गम,
कोई पराया है या है अपनापन,
अब तो बस साथ निभाने की आदत सी हो गई है।

आज जिंदगी में कुछ बनावट सी हो गई है,
आज जिंदगी में कुछ बनावट सी हो गई है।

– डॉ. शैली छाबड़ा

जीवन की राह अनोखी

जीवन की राह अनोखी,
ना मैंने देखी, ना तूने देखी,

नव जीवन की राह में,
सुख की छांव हो या हो तपन।
जीवन के हर मोड़ पर,
साथ निभाने थे सात वचन।

फिर बढ़ चले दोनों उस राह अनोखी,
जो ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

जीवन की राह अनोखी,
ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

साथ मिला जब तेरा मुझको,
खिल उठा फिर जीवन मेरा।
जीवन साथी बन कर तूने,
सपना सच कर दिया मेरा।

फिर बढ़ चले पाने को हर खुशी अनोखी,
जो ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

जीवन की राह अनोखी,
ना मैंने देखी,ना तूने देखी।

फिर फूलों का खिला चमन,
जब आँगन में आए भाई-बहन।
माँ-पापा कह कर हमे पुकारा,
हँसी-खुशी फिर वक्त गुजारा।

फिर बढ चले पाने को उम्मीद अनोखी,
जो ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

जीवन की राह अनोखी,
ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

हर कदम पर नई राहें खुली,
जीवन में हर खुशी मिली।
जीवन की राह में आए उतार-चढ़ाव,
प्रभु की करुणा का रहा सदा प्रभाव।

फिर बढ़ चले पाने को प्रभु कृपा अनोखी,
जो ना मैंने देखी, ना तूने देखी।

जीवन की राह अनोखी,
ना तूने देखी, ना मैंने देखी।

– डॉ. शैली छाबड़ा

हे प्रभु जब तक ज़िंदगी चले

हे प्रभु जब तक जिंदगी चले,
मेरी हर खुशी हर गम में तेरा साथ रहे,
मेरी जुबान के हर लफ्ज में तेरा ही नाम रहे,
मेरी हर साँस में सिर्फ तेरा ही सिमरन रहे।

चाहे फूलों की खुशबू मिले या काँटों की चुभन,
सुख की छाँव मिले या दुख की तपन,
हकीकत की दुनिया मिले या ख्वाबों का सृजन,
बस खिले हर राह पर प्रभु हे!
तेरे नाम के सुमन।

चाहे हँसी की बरसात मिले या आँसुओं का रुदन,
आशा की किरण मिले या निराशा की घुटन,
प्रशंसा की बौछार मिले या नाराजगियों की गुंजन,
बस खिले हर राह पर हे प्रभु!
तेरे नाम के सुमन।

बस खिले हर राह पर हे प्रभु!
तेरे नाम के सुमन,
बस खिले हर राह पर हे प्रभु!
तेरे नाम के सुमन।

– डॉ. शैली छाबड़ा

जीने की चाहत

कभी दर्द की धूप में जलती रही,
कभी खुशियों की बरसात में डूबी रही।
कभी जिंदगी में उतार-चढ़ाव सहती रही,
फिर भी जीने की चाहत हमेशा रही।

कभी अजीब सी बेचैनी सताती रही,
कभी जिंदगी में उलझनें आती रहीं।
कभी आशा तो कभी निराशा रही,
फिर भी जीने की चाहत हमेशा रही।

कभी भावनाएं आहत होती रहीं,
कभी जिंदगी प्यार से सहलाती रही।
कभी सुख तो कभी दुख में भिगोती रही,
फिर भी जीने की चाहत हमेशा रही।

– डॉ. शैली छाबड़ा

श्रीमती नीना श्रीवास्तव

जबलपुर, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती कृष्णा श्रीवास्तव**।
- पति का नाम : **श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिन्दी एवं अर्थशास्त्र)।**
- पदनाम : **गृहिणी , लेखिका एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत कुछ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **माँ।**
- **प्रीत की डोर।**
- **माँ का आँचल।**
- **संवारे की बंसी।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीवन के रंग

जिंदगी तेरे रंग हजार,
कभी हंसाती कभी रुलाती।
कभी इठलाती कभी इतराती,
कभी बताती कभी सिखाती।।

नए नए रंगों से इंद्रधनुष बनाती,
नीले पीले लाल गुलाबी।
जीवन के नए नए रंग बताती,
जीने की नई राह दिखाती।।

आंखों के आशु होठों की हंसी,
कदम कदम पर साथ निभाती।
नित नित नई आशाएं देकर,
सही राह पे चलना सिखलाती ।।

अगर कही मन हो उदास तो,
साथी बनकर साथ निभाती।
ऊंचे ऊंचे सपने देकर,
हमें आगे बढ़ना सिखलाती।।

कभी जिंदगी बार बार गिराती,
ऊंचाइयों पे उड़ना सिखाती ।
पहले से भी मजबूत बनाती,
कामयाबी हमको दिलवाती।।

– नीना श्रीवास्तव

खेल ज़िंदगी के

जिंदगी क्या क्या खेल दिखाती है,
कभी हंसाती तो कभी रुलाती है।
कभी रास्ते कभी मुश्किलों से,
सामना करवाती हैं।

आसान नहीं है दुनिया में,
अपना एक मुकाम बनाना।
क्योंकि मुश्किल है जिंदगी में,
खुद को समझ पाना।

जिंदगी के खेल में तो सभी,
हार जाते है ।
लेकिन जो हार न माने,
वही निडर कहलाते है।।

फिर भी जिंदगी यू हीं
चलती जाती है।
वो ही जिंदगी में एक,
अलग मुकाम बनाते हैं ।

मेरी तो बस यही है राय,
मत कहो जिंदगी से हाय।
आज है कल हो न हो,
बस हर पल को खुल के जियो।।

– नीना श्रीवास्तव

श्री महेन्द्र कुमार मिठारवाल

श्रीमाधोपुर, सीकर, राजस्थान

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री रामावतार मिठारवाल ।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती कमला देवी**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिन्दी एवं भूगोल), बी.एड., पीजीडीसीए एवं बी. एल. आई. बी.**।
- पदनाम : **सहायक आचार्य, लेखक एवं कवि ।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **०४** वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीवन : संघर्षों की गाथा

जीवन की हर साँझ सुने, भीतर की आवाज,
संघर्षों से बनती है, सपनों की परवाज़।

मूल्य नहीं जो समझ सका, दुःख की सच्ची बात,
वो केवल जिए शरीर से, नहीं जिया सौगात।

दूर दिखे जो मंज़िल तो, डर मत तू अंधेरों से,
पथ उज्ज्वल हो जाता है, संघर्षों के फेरों से।

हर क़दम पे काँटे हैं, हर मोड़ पे सवाल,
फिर भी चलता जाए जो, जीवन में वो कमाल।

सच के रस्ते मुश्किल हैं, झूठ के मार्ग आसान,
पर मूल्य उसी जीवन का, जो सहे सच्चा अपमान।

धैर्य रखो, न टूटो तुम, चाहे टूटे आस,
संघर्षों से जो जीतता, उसका होता प्रकाश।

नदी सी बहती ज़िंदगी, पत्थर रोक न पाएं,
मूल्य उसी की कथा बने, जो खुद को समझाए।

स्वार्थ से ऊपर उठ कर जो, परहित पथ अपनाए,
जीवन उसका गौरवमयी, जग उसको अपनाए।

संघर्ष ही दीपक है, मूल्य उसका प्रकाश,
जो जले बिना डरे कभी, वो जीवन की तलाश।

आँसू पोंछ खुद के तू, औरों की आँखों से,
मूल्य तभी तू पाएगा, जीवन के पाठों से।

– महेंद्र कुमार मिठारवाल

जीवन: तप का ताज

जीवन केवल साँस नहीं है, ये एक तपस्वी व्रत है,
हर दिन की चुनौतियों में, छिपा हुआ स्वर्ण रथ है।

मूल्य उसी जीवन का होता, जो पीड़ा में मुस्काए,
जो टूटे, फिर भी जुड़ जाए, अश्रु पीकर भी गाए।

संघर्षों के शूल बिछे हों, फिर भी पग थमे नहीं,
सच का दीप जलाकर जो चले, वो कभी झुके नहीं।

हर इक दिन एक युद्ध है, हर पल नई कहानी,
मूल्य उसी का बढ़े यहाँ, जिसने रची निशानी।

सपने टूटे, दिल रोया, फिर भी चलता जाए,
जीवन वो ही श्रेष्ठ है, जो धैर्य न खो पाए।

धूप-जैसी परिस्थितियाँ, जब तन-मन को जलाएं,
तब भी जो शीतल बने, वही जीवन सिखलाए।

मूल्य वही जो आत्मा में, सच्चाई भर जाए,
जो बुराई से न डरे, औरों की भलाई लाए।

धन से नहीं, विचारों से, जीवन मूल्यवान,
संघर्षों में जो सदा खड़ा रहे, वही महान।

अंधकार जब घेर ले, और दीपक बुझ जाए,
तब मन की ज्वाला जो जले, वही राह दिखलाए।

जो हर तिनके में देखे, आशा का संदेश,
उस जीवन से महक उठे, सूना हर परिवेश।

– महेंद्र कुमार मिठारवाल

श्री राजेश कुमार बौद्ध

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **निर्वाणप्राप्त श्री बेचू प्रसाद**।
- माता जी का नाम : **श्रीमती फुलेसरा देवी**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर।**
- पदनाम : **सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक एवं संपादक ।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **२५** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- दम तोड़ती मेरी आवाज़।
- मोची।
- संत रैदास।
- काश तुम समझ पाते।
- प्रबुद्ध विमर्श पत्रिका।
- दलित विमर्श : कुछ प्रश्न कुछ संकेत।
- आधुनिक भारत के निर्माता बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

पुत्री

ये कहानी नहीं है
एक हकीकत है
जब तक पिता जिंदा है,
पुत्री मायके में हक से आती है
और जिद कर लेती है।
कोई कुछ कहे तो
तुरंत डट के बोल देती है
कि मेरे पिता का घर है
जैसे ही पिता मरता है
पुत्री इतनी चीत्कार करके रोती है
वो बेटी उस दिन से
अपनी हिम्मत हार जाती है।
क्योंकि,
उस दिन उसका पिता ही नहीं
उसकी वो हिम्मत भी मर जाती है,
आगे लिखने की हिम्मत नहीं है मुझे
बस इतना ही कहना चाहूँगा
कि पिता के लिए पुत्री,
उसकी जिंदगी होती है,
पर वो कभी बोलता नहीं,
और पुत्री के लिए पिता दुनिया की
सबसे बड़ी हिम्मत और घमंड होता है,
पुत्री भी यह बात कभी
किसी को बोलती नहीं है,
पिता पुत्री के रिश्ते में
प्रेम समुद्र से भी गहरा होता है..!!

– राजेश कुमार बौद्ध

रोटी

मैंने रिक्शे वालों को
बहुत गौर से देखा
इतनी ठंड में
सड़क के किनारे
पटरियों पर कतार लगाये हुए हैं,
किसी सवारी के इंतज़ार में
बैठें बैठें राह देख रहा है।
जैसे ही बस को
आते जाते देखते हैं,
रिक्शा लेकर दौड़ने लगते हैं।
उनके चेहरे पर एक नई चमक
दिखायी देती हैं।
कोई सवारी उस बस से उतरेगा।
और उनकी रिक्शा में आकर बैठेगा।
कम से कम कल की नहीं तो
आज शाम की सब्जी रोटी की
व्यवस्था हो जायेंगी।
और जब कोई नहीं उतरता,
तो मायूस होकर
फिर अपने रिक्शे पर बैठ जाता
फिर दूसरे बस की इंतजार में
राह जोहते जोहते शाम ढल जाती
शाम ढलते ही ठंड बढ़ जाती
इस ठंड में पूरे दिन भर की कमाई
सौ, डेढ़ सौ हो जाती
तब कहीं जाकर एक टाइम की
सब्जी और रोटी की व्यवस्था हो पाती।

– राजेश कुमार बौद्ध

किसान

चाहे तेज धुप हो या तेज बारिश,
किसान कभी नहीं रुकते।
कभी सिर पर अंगोछा डाल,
तो कभी कीचड़ में
पांव डुबोकर
खेत में लगे रहते हैं।
बारिश में भीगते हुए
बीज बोते हैं,

तेज़ धूप में पसीने से तर-बर
होकर फसल की देखभाल करते हैं।
हर मौसम से लड़कर,
हर मुश्किलों को झेलकर
वे अन्न उगाते हैं।
जब खेतों में हरियाली लहराती है,
तो वही मेहनत किसान के चेहरे पर
मुस्कान बनकर
उनके चेहरे पर खिलती है।

– राजेश कुमार बौद्ध

सिर्फ यादें

वह भी क्या दिन थे
जब गर्मियों की रातों में
आंगन में चारपाई बिछाकर
खुले आसमान के नीचे सोना
एक अलग ही सुकून देता था।
हवा में हल्की ठंडक,
जुगनू पूरी रात
टिम- टिमाकर
अंधेरे में भी रोशनी देती थी,
और ऊपर चमकते तारे
ऐसा लगता था
जैसे तारे एक- दूसरे से बातें कर रहे हों।
चांदनी रात में
आकाश इतना साफ दिखता था
कि मन करता था
बस यूं ही आसमान को देखते रहें।

तब न कोई फोन था,
न कोई भागदौड़
बस परिवार के साथ बैठकर
बातों में रातें कट जाती थीं।
वो ताजगी,
वो सुकून
अब सिर्फ यादें ही रह गयी।

– **राजेश कुमार बौद्ध**

डॉ. प्रीति चौबीसा

डूंगरपुर, राजस्थान

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री हेमेंद्र कुमार चौबीसा।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती कौशल्या देवी चौबीसा।**
- पति का नाम : **श्री अनिल कुमार गुप्ता।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर, एम फ़िल, बी. एड. एवं विद्या वाचस्पति।**
- पदनाम : **लेखिका एवं कवयित्री।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **02** वर्षों से सक्रिय लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- हिंदी साहित्य का इतिहास।
- अन्वेषक (पत्रिका में अध्याय प्रकाशित)।
- जनरल ऑफ फंडमेंटल एंड कम्पेरेटिव रिसर्च (पत्रिका में अध्याय प्रकाशित)।
- उनसे इश्क़ करके (साझा संकलन)।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

टूटते रिश्ते और बदलते हालात

वफ़ाओं के नगर में अब अजनबी हालात क्यों हैं,
मेरे अपने मुझसे मिलने में भी बेवजह क्यों हैं।

लगी थी आग रिश्तों में, धुआँ आँखों में उतरा,
मोहब्बत के सफ़र में अब ये ख़ाली रात क्यों हैं।

मेरे सपनों के मौसम में खिले थे फूल पहले,
अब उनकी शाख़ सूखी है, हवा में मात क्यों हैं।

कभी जो साथ चलते थे, वही अब दूर हैं मुझसे,
ज़रा बतला, ये दूरी में ये सौग़ात क्यों हैं।

प्रीत ने हर एक लफ़्ज़ में रखी है महक अपनी,
मगर लोगों के दिल में अब ये सूखे पात क्यों हैं।

उजालों की तलाश में हूँ, अँधेरों के सफ़र से,
शायद कल की सुबह में फिर नई सौग़ात क्यों हैं।

टूटकर भी दिल में अब मोहब्बत ज़िंदा रहती है,
ज़िंदगी की किताब में यही तो बात क्यों हैं।

– डॉ प्रीति चौबीसा

तुझे पाने की ख्वाहिश

कुछ लफ़्ज़ दिल में थम से गए, कुछ अश्क़ पलकों पर आए हैं,
कुछ लिखने को दिल करता है, पर जज़्बात बहुत शरमाए हैं।

हर रोज़ तुझे ही सोचा है, हर रात तुझे ही चाहा है,
तुझे पाने को दिल करता है, पर रास्ते सब भरमाए हैं।

तेरे बिन ये दिल सुना-सुना, हर साज़ भी जैसे टूटा है,
तुझसे बिछड़ के जाना है, तन्हाई कैसे सताए हैं।

कहने को तो सब कहते हैं, तक़दीर से जो भी पाया जाए,
तू किस्मत में जब शामिल न था, फिर क्यों ख्वाब हमें दिखलाए हैं?

तेरे बिना जो बीते हैं, वो लम्हें नहीं बस साए हैं,
तू कहता है जो मुमकिन नहीं, वो ख़्वाहिश क्यों दिल में आए हैं?

अपने हाथों की लकीरों से, शिकवा नहीं अब तक़दीर से,
कुछ कर ऐसा ऐ रब कि मैं, बस तुझसे खुद को मिलाए हूँ।

तेरी रज़ा में खो जाऊं, तुझमें ही खुद को पाऊं मैं,
प्रीत की ये आख़िरी दुआ, हर साँस तुझमें समाए हूँ।

– डॉ प्रीति चौबीसा

नारी की आत्म-संवेदना

आज से पहले मुझे तुझसे प्यार था,
हर रिश्ते में तेरा ही आधार था।

तेरे संग हँसना, तेरे संग रोना,
मेरा हर दिन तुझसे ही सरोकार था।

मैंने कभी कुछ माँगा नहीं तुझसे,
बस साथ निभाना मेरा उपहार था।

तेरे ख्वाबों को ही जीती रही मैं,
अपना होना तुझमें ही स्वीकार था।

पर जब मेरी खामोशी को कमजोरी समझा गया,
तब जाना — ये मौन भी एक प्रकार का पुकार था।

अब मैंने खुद को थामा है, संभाला है,
अपने ही अंतर्मन से पहला संवाद था।

अब "प्रीत" सिर्फ नाम नहीं, आत्मा की गूंज है,
जो कल तक समर्पण थी, आज आत्म-संमान की धार है।

– डॉ प्रीति चौबीसा

अनकही दास्तां

कहूँ मैं दिल की बात, कोई सुनता नहीं,
भीड़ में हूँ मौजूद, पर कोई मिलता नहीं।

हर चेहरा अपना सा लगता है यहाँ,
फिर भी सुकून का कोई रिश्ता बनता नहीं।

सब कहते हैं मेरे हैं, मेरे पास खड़े,
पर सच में कोई भी मेरा दिखता नहीं।

हमसाया तलाशा तो सन्नाटा मिला,
दर्द कहने को कोई आँचल मिलता नहीं।

ज़िंदगी के आईने में देखा जब मैंने,
खुद का ही साया भी साथ चलता नहीं।

ये दिल की तन्हाई अब किससे कहे प्रीत,
राहों में भी मंज़िल कभी दिखती नहीं।

– डॉ प्रीति चौबीसा

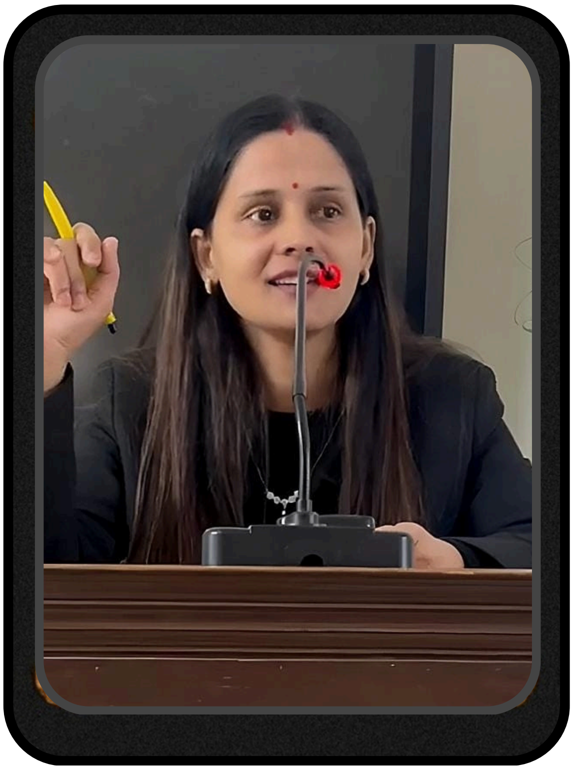

श्रीमती मीना जोशी "मनु"

हल्द्वानी, उत्तराखंड

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री केदारदत्त पाण्डे।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती पार्वती पाण्डे**।
- पति का नाम : **श्री पवन जोशी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं एलएलबी।**
- पदनाम : **समाजसेविका, साहित्यकारा एवं कवयित्री**।
- साहित्यिक अनुभव : विगत **05** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

अब तक दर्जनों संकलनों में सह रचनाकार के रूप में प्रतिभाग किया है।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

कितनी लंबी होगी परिक्षा

है मालिक तू दाता मेरा, मैं चरणों का दास तेरा।
कैसे होगा मिलन, बताओ? दासी जोड़ हाथ अरदास करे।
तुम ही सब रचने वाले, लीला करते ये कैसी गिरधारी।
हो तुम त्रिभुवन में, मैं माटी का इक छोटा सा कण।

राधा के तुम मोहन प्यारे, मीरा के तुम हो गिरधारी।
द्रौपदी के तुम सखा सहारे, वर्षों से विरह में तेरे,
मिलन की आशा है बनवारी, एक दरश आके देदें,
चातक सा प्यासा पक्षी मैं, मेघ हटाओ, प्यास बुझाओ।

मिलन का रास्ता कोई सुझाओ, पथराई दासी की अखियाँ
इन आँखों से न ओझल होना, नयनों में भर लूँ ऐसे मैं तुमको।
ओझल न होने दूँ मैं तुमको, ये सारी ही दुनिया बेगानी।
अपना-अपना ही सोचे है, अपने क्या मैं हाल सुनाऊँ?

क्या ही अपनी व्यथा बताऊँ, अपने दर्द को क्या ही छिपाऊँ?
तेरे दर पे अपनी अर्जी लगाऊँ, हर प्रश्नों के तुझसे उत्तर पाऊँ,
इस भव सागर से पार हो जाऊँ, प्रभु तेरी कृपा का सागर पाऊँ,
मेरे जैसा मूरख अज्ञानी, विधि न जानूँ कैसे तुमको मनाऊँ ।

– मीना जोशी "मनु"

कोरा कागज

लेकर कोरा कागज बैठी,
कलम साथ ही लिए दवात।
लिखना है अधिकार हमारा,
लिखे एक और पढ़े हजार।

लिखूंगी उस कागज पर क्या,
ऐसा कुछ अब तक सोचा न।
ऐसा कुछ तो लिखना होगा,
परिणाम बदलने को हो तैयार।

बातें सारे जहाँ की होंगी,
और कई टटोल मन रखूँगी।
कहीं हजारों दर्द लिखूँगी,
कहीं दर्द के मर्म की होगी बात।

कुछ यादें भूली बिसरी होंगी,
कुछ चाहत मंजिल पाने की।
कहीं प्रेम में टूटा दिल होगा,
चर्चित कोई प्रेम कहानी होगी।

कहीं कोई बचकानी बातें,
कुछ संघर्षों की गाथा होगी।
कुछ दरिया का बहता जल,
कुछ कुएं की सीमाएँ होंगी।

कुछ पंछी सा चंचल मन होगा,
कुछ कल्पनाएँ स्वप्निल होंगी।
लगता है क्या लिखना होगा,
शब्दों के बंधन में बँधना होगा।

शब्दों की भी कोई सीमा होगी,
कुछ बंधन में भी रहना होगा।
सब कुछ लिखना ठीक रहेगा,
या लिखने से भी डरना होगा?

जो भी न कह पाए जुबा से,
कागज पर उसे उकेर दिया ।
भाव वही समझेगा उसका,
जिसने उसको मन से पढ़ा ।

कुछ संवादों के परिप्रेक्ष्य में,
किसी प्रश्न का उत्तर चाहना होगा।
काम कवि का लिखना है,
तुमको उसका सार समझना होगा।

कौन पढ़ेगा कोरा कागज,
जिसमें ये सब लिखा होगा?
भावों से भरा हुआ मैं सरलहृदय,
निश्चित तुमको मुझे समझना होगा।

– मीना जोशी "मनु"

नारी का अनंत ब्रह्मांड

ख़ामोशी को कमज़ोरियों का पर्याय न समझो,
यह ख़ामोशी, सहनशीलता का अभिनव रूप है।
श्रद्धा-भाव से झुकना मेरी चाहत है,
मैं सृष्टि की पूजा, त्रिदेवों की प्रार्थना, माँ अंबे हूँ।

गार्गी सी वाणी, मैत्रेयी सी बुद्धि हूँ,
सीता सी सहनशक्ति, सावित्री सी निष्ठा हूँ,
अनसूया सी साधना—सब कुछ मुझमें समाया है।
वक्त आने पर मैं ही दुर्गा, काली बन जाती हूँ।

बुद्धि में सरस्वती, शक्ति में भैरवी हूँ,
धन-धर्म की पालक, लक्ष्मी भी मैं ही हूँ।
मेरे भीतर बसता है एक अनंत ब्रह्मांड,
मेरी सीमाएँ, कभी नहीं आसानी से होगी पार ।

नारी की मुस्कान में छुपा है तूफ़ान का आगाज़,
नारी की आँखों में बसती है सृष्टि की सजगता।
मैं ही हूँ वो, जो हाथों से मोम बनाती है,
और पल भर में लोहा भी गला देती है।

कोमलता को देख मेरी इतनी कमज़ोर न समझो,
जब खुद पर आ जाऊँ, तो चंडी सी लगती हूँ।
संहार करने को महाकाल सी ठहरती हूँ,
अर्धनारीश्वर रूप में महाकाल की संगी हूँ।

– मीना जोशी "मनु"

प्रकृति का खूबसूरत तोहफा हूँ मैं

मैं प्रकृति का वो खूबसूरत तोहफा हूँ,
जिसमें हर सुबह की मुस्कान बसती है,
मन के भीतर कई सपने सजते हैं,
हवा की लहरों में गीत बिखरे हैं।

मैं कवि की वो कविता हूँ,
जिसमें शब्द से ज्यादा भाव बसा है,
जिसे पढ़ते ही आत्मा जाग उठती है,
हर पंक्ति में जीवन की गहराई है।

मैं कहानीकार का वो सार हूँ,
जिसे जीवन में जिया जाता है,
सपने, संघर्ष, सुख-दुःख समाए हैं,
हर मोड़ पर नई कहानी बनाता है।

मैं गजलकार की वो गजल हूँ,
जिसमें दर्द और मोहब्बत संजोए हैं,
हर साज़ पर दिल धड़कता है,
जिसे सुनते ही आँखें नम हो जाती हैं।

मैं चित्रकार का वो चित्र हूँ,
जिसे रंगों से उकेरा जाता है,
हर रेखा में भाव छुपा है,
हर पल नया रुप बसता है।

मैं संगीतकार का वो संगीत हूँ,
जिसे सुरों में महसूस किया जाता है,
हर धुन में जीवन की लय है,
जो हर दिल में सुकून गूंजता है।

मैं भजनकार का वो भजन हूँ,
जिसमें साधक ध्यान में डूब जाता है,
शांति आत्मा को छू लेती है,
हर पल ईश्वर का स्मरण दिलाता है।

मैं शिल्पकार का वो शिल्प हूँ,
जिससे आकार दिया जाता है,
बेजान मूर्ति भी बोल उठती है,
सुंदर, सजीव, जानदार सी लगती है।

मैं जोहरी का वो आभूषण हूँ,
जिसे तराशा जाता है,
चमक मूल्यवान है,
हर जीवन को सजाता है।

मैं लेखक की वो लेखनी हूँ,
जिसे शब्दों में लिखा जाता है,
हर पन्ने पर मेरी कहानी है,
समय की धारा को सहेजती है।

मैं अलंकार का वो आलाप हूँ,
जिससे दुःख को मापा जाता है,
हर भावना की गहराई है,
मन के अंधेरे को रोशन करता है।

मैं पूनम की वो चाँदनी रात हूँ,
जिसमें रात भर जागा जाता है,
ख्वाब और सच्चाई का सफर है,
हर आत्मा को रोशनी देता है।

मैं सितारों में वो ध्रुवतारा हूँ,
जिसे चमक से पहचाना जाता है,
हर अंधेरे में राह दिखाता है,
हर यात्रा में मार्गदर्शक बनता है।

– मीना जोशी "मनु"

कविता सिंह "सृजना"

चित्रकूट , उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री जियालाल सिंह।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती राजरानी सिंह**।
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातक, स्नातकोत्तर एवं बीएड।**
- पदनाम : **सहायक अध्यापिका (राजकीय इंटर कॉलेज, करतल नरैनी, बांदा, उत्तर प्रदेश)।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **03** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **नदी बहती रही।**
- **होली उत्सव।**
- **हिंदी मेरी जान।**
- **बेटी घर की।**
- **नारी का आत्मसंवाद।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

विद्यालय में मेरा पहला दिन

आज मेरा किरदार बदलने जा रहा है,
बच्चों के बीच मेरा सत्कार होने जा रहा है।

कुछ सपने मैंने थे देखे अपने बच्चों के प्रति,
और कुछ सपने बच्चों के आंखों में थे अपने गुरुजन के प्रति।
आज हम दोनों का सपना साकार होने जा रहा है।।
आज मेरा किरदार बदलने जा रहा है,
बच्चों के बीच मेरा सत्कार होने जा रहा है।

बच्चों ने जब मुझे प्रणाम किया मेरा आदर सम्मान किया,
उस पल के भाव और मान को शब्दों में ना बयान किया।
आज हम दोनों के भाव विभोर का मेल होने जा रहा है।।
आज मेरा किरदार बदलने जा रहा है,
बच्चों के बीच मेरा सत्कार होने जा रहा है।

मन में कुछ उमंग लेकर जब मैंने कक्षा में प्रवेश किया,
बच्चों की मासूमियत अज्ञानता ने मुझको भाव विभोर किया।
आज हम दोनों का हृदय से बंधन बंधने जा रहा है।।

– कविता सिंह 'सृजना'

बेटी होना अभिशाप है

आखिर कब तक हमें यह दर्द सहना होगा।
एक बेटी होने का कर्ज उतारना होगा।
ऐसे हैवानों, दरिंदों का सामना करना होगा॥
आखिर कब तक कोई निर्भया, मैमिता, शिवांगी,
ना जाने कितनी बहू,बेटियां इन दरिंदों का शिकार होगी।
शासन प्रशासन सब इसमें अपनी रोटियां सेकता है।
हमें न्याय क्यों चाहिए दूसरे से हमें खुद ही न्याय लेना सीखना होगा।
लक्ष्मी—सरस्वती का रूप छोड़कर दुर्गा का अवतार लेना होगा।
यह पुलिस प्रशासन कुछ नहीं कर सकती उन दरिंदों का।
हमें खुद ही न्याय के लिए लड़ना सीखना होगा॥
जब हमको थोड़ा सा चोट लगती है तो कितना दर्द होता है।
सोचो वह बहू बेटियां जिनको जिंदा जलाया जाता है।
हड्डी हड्डी तोड़कर शरीर के हिस्सों को चबाकर
गैंगरेप करके मौत के मुंह उतारा जाता है॥
वह चिल्लाती है माँ मुझे बचाओ, छोड़ दो, जाने दो, बहुत दर्द हो रहा है,
फिर भी उन राक्षसों को दया का कोई एहसास ना आया होता है।
आखिर कब तक हमें यह दर्द सहना होगा।
एक बेटी होने का कर्ज उतारना होगा।
ऐसे हैवानों,दरिंदों का सामना करना होगा॥

– कविता सिंह 'सृजना'

श्रीमती अलका त्यागी

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री ईश्वर दत्त त्यागी।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती ओमेश्वरी त्यागी।**
- पति का नाम : **श्री पंकज त्यागी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर एवं बीएड।**
- पदनाम : **अध्यापिका, लेखिका, कवयित्री एवं सुगृहिणी**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **03** वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

प्रकाशित कृतियाँ

- **पर्यावरण के प्रहरी ।**
- **सोहम का संकल्प ।**
- **माँ की अद्भुत शक्ति ।**
- **शिक्षक ।**
- **गुरुवर ।**
- **आजादी का बिगुल।**

जिंदगी के रंग

छोटी सी है ज़िंदगी, हर पल है एक कहानी,
कभी है धूप, कभी है छाँव, कभी है बहता पानी।
गिर कर फिर उठना, उठकर चलना यही है पहचान इसकी,
हर मोड़ पर है कुछ नया, हर पल है नया इम्तिहान ।

सपनों की है ये उड़ान, आशाओं का है ये संसार,
कभी मिलती है खुशी, कभी मिलता है दुख का अँधकार।
रिश्तों की डोर से, बंधे हैं यहाँ सभी,
कोई पास है बहुत, कोई है दूर बहुत ।

चलते रहना है राहों में, मंज़िल की है तलाश,
हर सुबह के संग आती है, एक नई आस।
जी भर के जियो हर लम्हा, यही है इसका सार,
ज़िंदगी है एक अनमोल तोहफा, करो इसका सत्कार।

– अलका त्यागी

जिंदगी की कहानी

जिंदगी की कैसी अजब कहानी है,
कभी हँसाती, तो कभी रुलाती है।
हर पल एक नया मोड़ दिखाती है,
कहीं धूप तो कहीं छाँव आती है।।

सपनों के पीछे दौड़ता है ये मन,
कभी जीतता, कभी हारता है ये मन,
फिर भी उम्मीद नहीं छोड़ता है
गिरकर फिर से खड़ा हो जाता है।।

कुछ रिश्ते बनते-बिगड़ते हैं,
कुछ यादें बनके रह जाते हैं।
कुछ अनकहे अल्फ़ाज़,
बस दिल में ही दबे रह जाते हैं।।

ये सफर है ज़िंदगी का,
जिसमें हर मोड़ पर एक नया सबक मिलता है।
जीने का ढंग, हर ठोकर से ही तो इंसान सीखता है।

– अलका त्यागी

श्रीमती पूजा कुमारी

मधेपुरा, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **श्री अशोक कुमार भगत।**
- माता जी का नाम : **श्रीमती रेखा देवी।**
- पति का नाम : **श्री संतोष कुमार।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर ।**
- पदनाम : **विशिष्ट अध्यापिका (उत्क्रमित मध्य विद्यालय, भर्राही बाजार, मधेपुरा, बिहार)**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **कुछ** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **निपुण बाल मंच, बिहार सरकार, पटना ।**
- **सोनभद्र एक्सप्रेस संस्करण, पटना।**
- **बिहार कथा न्यूज़।**
- **कोसी टाइम्स, मधेपुरा।**
- **प्रभात खबर, मधेपुरा।**
- **दैनिक जागरण, मधेपुरा।**
- **दैनिक भास्कर, मधेपुरा।**
- **हिंदुस्तान अखबार, मधेपुरा।**
- **नई बात मुरलीगंज**
- **न्यूज़ जंक्शन मधेपुरा।**
- **अनुपमा छठा संस्करण।**
- **पर्यावरण संरक्षण-बिहार की जलवायु और प्राकृतिक संदर्भ में एक आवश्यकता**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

बेटी अभिशाप नहीं वरदान है

जाने क्यों लोग बेटी को बोझ समझते हैं।
बेटी कोई अभिशाप नहीं यह तो आंगन की लक्ष्मी है।।
किसी के घर खुशहाली बनकर तो
किसी के घर लक्ष्मी बनकर आती है यह बिटिया प्यारी।
जिसके घर बेटी ना हो उसके घर बन जाती है रानी।।

क्या घर वाले और क्या दुनिया वाले सभी देते हैं सम्मान।
पूजनीय बन जाती है वे देवी के समान।।
बेटी, बहन, बहू और मां बनकर।
रहती सदा सहनशील बनकर।।

कहते हैं लोग बेटी है अभिशाप।
वरन् अभिशाप नहीं है, वरदान।।
जो लोग पा जाते हैं बेटी के कुमकुम कदम।
वो लोग होते हैं, जगत में भाग्यशाली।।

मिलती उसे जिदंगी की सौगात।
बेटी अभिशाप नहीं वरदान है।।

– पूजा कुमारी

लहराओ तिरंगा

लहराओ तिरंगा नभ में ऊँचा,
हर दिल में उसको सजाना होगा।
जय-हिंद, जय-हिंद का नाद गूंज
हर कोने में पहुंचाना होगा।।

हमारा ध्वज मात्र ध्वज ही नहीं,
यह वीरों की पहचान है।
यह शौर्य, बलिदान, समर्पण है,
भारत आन बान और शान है।।

15 अगस्त की पावन बेला में,
हम, गौरवगाथा गाएँगे,
हर घर, हर विद्यालय में,
आज़ादी का दीप जलाएँगे ।।

पंद्रह अगस्त का स्वर्ण दिवस,
कितनी कुर्बानी की छाया है।
एक-एक रंग में लहू जवानों का,
हर रेखा में इतिहास समाया है।।

भारत माँ के चरणों में,
श्रद्धा सुमन चढ़ाएँगे।
रक्षा का वचन लेकर,
हर दुश्मन से टकराएँगे।।

स्वदेश-प्रेम हो जीवन का मंत्र,
हर हृदय में यह भाव भरे।
"वंदे मातरम्" की जयध्वनि,
धरती से अम्बर तक गुंजे।।

चलो तिरंगा फहराएँ फिर से,
सम्मान उसका बढ़ाना होगा।
जय-हिंद का नारा देकर हमको
भारत का मान बढ़ाना है।।

– पूजा कुमारी

श्री रमापति मौर्य

इटावा, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **स्व. श्री रामराज मौर्य।**
- माता जी का नाम : **स्व. श्रीमती भानमती देवी।**
- शैक्षणिक योग्यता : **स्नातकोत्तर (हिंदी, संस्कृत व राजनीति शास्त्र), बी. एड. एवं विधि स्नातक।**
- पदनाम : **हिंदी प्रवक्ता, लेखक एवं कवि।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **02** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

अब तक दर्जनों संकलनों में सह रचनाकार के रूप में प्रतिभाग किया है।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जिंदगी तेरे रंग हजार

जिंदगी तेरे रंग हजार,
किसी से नफरत किसी से प्यार।
कहीं जीत तो कहीं है हार,
जीवन के रंग हजार।।१।।

खुशी और गम आते- जाते,
रंग हजारों भरते जाते।
जीवन की सच्चाई से,
अवगत हमें कराते जाते।।२।।

अपने और पराये के भी,
रंग बदलते रहते।
सच्चाई से लोगों के,
बदरंग रंग हो जाते।।३।।

भूले -बिसरे प्रेमीजन,
कभी-कभी मिल जाते।
भूले -बिसरी बातों को,
फिर से याद दिलाते ।।४।।

समय-समय पर जीवन के ,
रंग बदलते रहते।
बदले हुए रंग में,
अपनों के रंग दिखते।।५।।

जो कल तक अपने दिखते थे,
वो आज पराये लगते।
जो सबसे प्यारे लगते थे,
वो जान के दुश्मन दिखते।।६।।

समय की सत्ता समय-समय पर,
सबको बदला करती।
अपने और पराये की,
पहचान कराया करती।।७।।

जीवन में हर रंगों को,
हंस-हंस भरते रहना।
हंसी-खुशी का जीवन है,
हंसी-खुशी से जीना।।८।।

मत घबड़ाना कभी दुःखों से,
मजबूती से लड़ना।
आज नहीं तो कल परसों में,
निश्चित है सुख आना।।९।।

वक्त बदलते हैं सबके,
वक्त बदलते देखा।
बदले वक़्त के रंगत में,
राजा को रंक में देखा ।।१०।।

रंगों का होता है जीवन,
रंगों को भरते रहना।
नये-नये रंगों को भर के,
खुशियां लेते रहना।।११।।

रंगों ने बदले रंग बहुत,
रंगों ने रंग बिखरे।
रंगारंग के जीवन ने ,
बहुतों के रंग निखारे।।१२।।

– रमापति मौर्य

जिंदगी तेरे हजार रंग

मेरे जीवन में आकर,
वो रंग हजारों घोला।
मेरे जीवन का मकसद ,
उन रंगों ने फिर बोला।।१।।

हंसी-खुशी रंगीन जवानी,
अपना रंग घोला।
तरुणाई में उसे देख,
मेरा भी मन डोला।।२।।

अपने रंग में हम को,
रंग के रंगीन बनाया।
अपने दम पर अलग मेरी,
वो पहचान बनाया।।३।।

हम से बड़ी सोच है उनकी,
अवसर पर दिख जाती।
रंग हजारों जीवन में ,
वो नित भरती रहतीं।।४।।

धन्य हुए हम उनका पाकर,
जीवन को महकाया।
ना जाने किस पुण्य के बदले,
हमनें उनको पाया।।५।।

प्यार -मोहब्बत के रंगों में ,
वो हमको रंग डाला।
त्याग -तपस्या -बलिदानों से,
जीवन स्वर्ग बना डाला ।।६।।

हैं तो वो मेरी पत्नी,
पर मित्र और गुरु दिखतीं।
हर पल मेरे संग में रह के,
हर संकट हर लेतीं।।७।।

सादा जीवन उच्च विचार,
अपना आदर्श बनातीं।
मेरे जीवन की उन्नति में,
जी भर सहयोग निभातीं।।८।।

सच्चाई पर कभी नहीं,
वो पर्दा डाला करतीं।
धर्म और न्याय संगत ,
हर बातें कह देतीं।।९।।

समझदार मुझसे बढ़कर,
हर बिगड़ा काम बनातीं।
सही गलत के अंतर को,
तर्क सहित समझतीं।।१०।।

नाम सुनीता नीति सुनीत,
हमको देती रहतीं ।
धर्म- कर्म औ पद की गरिमा,
बातें करती रहतीं।।११।।

हर रंगों में रंग अलग,
उनका हमको दिख जाता ।
मन उदार और मौलिकता का,
सारा गुण दिख जाता।।१२।।

– रमापति मौर्य

रंगों की रंगत

तुम हो सीता तुम हो गीता,
तुम्हीं आत्मा मेरी।
तेरे बिन जीवन का हर पल ,
खुशियां हरता मेरी।।१।।

समय-समय पर सारी खुशियां,
तुझसे मिलती रहती।
मेरी बगिया की तू मालिन ,
फूल खिलाती रहती।।२।।

तेरे फूलों की खुशबू ,
अब दूर-दूर तक जाती।
त्याग -तपस्या,बलिदानों की,
सारी रंगत दिखती।।३।।

त्याग- तपस्या से तेरे,
मैं तुझ में खो जाता।
कभी-कभी मैं भी कुछ हूँ,
विश्वास नहीं रह जाता।।४।।

जीवन में खुशहाली भरने,
लगता तू मेरे आई ।
तेरी रंगत क्या कहना,
तू रंग हजारों लाई ।।५।।

तेरे ही रंगों में मैं,
रंगा रंगाया दिखता।
अपने रंगों की यादें ,
याद न हमको रहता।।६।।

कोशिश हमने किया बहुत,
पर तुझे समझ न पाया।
हे! देवलोक की देवपरी,
तुझमें ही खोया पाया।।७।।

तेरे गुण के आगे,
मेरे गुण फीके लगते।
तेरे रंगों में रंगने से,
रंग मेरे खिल जाते।।८।।

भूल न जाना जीवन में,
रंगों की रंगत।
रंग ही भरते जीवन में,
सारे रंगों की रंगत।।९।।

जीवन में रंगों की रंगत,
तूने खूब बढ़ाया।
हर रंगों में खुशियों का।
अहसास हमें करवाया।।१०।।

बिछड़न- मिलन जीवन में,
सबके चलते रहते।
मगर बिछुड़ने की बेला में ,
कुछ ही जीवित रहते।।११।।

जीवन का अभिप्राय तुम्हीं ने,
सच में हमको समझाया ।
तू तो मेरी प्राण प्रिया ,
मन को मेरे समझाया।।१२।।

– रमापति मौर्य

तन्हाई का दर्द

मत उपहार हमें देना ,
तन्हाई का।
लगने लगता डर हम को,
तन्हाई का।।१।।

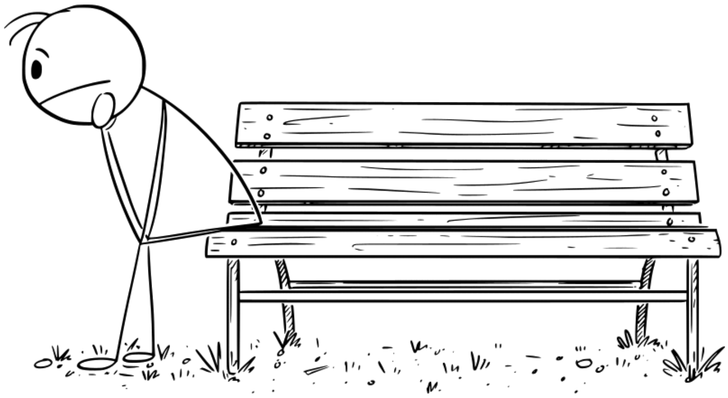

तेरे रहने पर तन्हाई,
पास न आया करतीं।
तेरे जाने पर तन्हाई,
तेरा डाला करतीं।।२।।

तड़प -तड़प कर बदल करवटें,
रातें काटा करता ।
दूर भागती नींद हरामिन,
रात -रात भर जगता।।३।।

हर प्रयास हुआ निष्फल,
तन्हाई दूर भगाने का ।
तड़प -तड़प हर पल जीता ,
पीड़ा सहता तन्हाई का।।४।।

हुआ बावरा मन मेरा ,
सारी मर्यादा तोड़ा ।
मिलन का हर उपाय,
फिर मेरा मन जोड़ा ।।५।।

तेरे संग में बड़ी रात भी,
हमको छोटी लगतीं।
तन्हाई में छोटी रातें,
युग सम हमको लगतीं।।६।।

किससे कहूँ दर्द तन्हाई,
हंसी उड़ाते लोग।
दर्द न समझे मेरा कोई,
दिखते बेदर्दी लोग।।७।।

तन्हाई का दर्द तुम्हें भी,
शायद होता होगा।
मेरे जैसी हाल तुम्हारी ,
शायद होता होगा।।८।।

तू अपने मन की बातें,
अगर पत्र में लिख देती।
हम भी अपने तन्हाई का,
पीड़ा तुझे सुना देता।।९।।

तुम्हीं बताओ तन्हाई का,
कब तक दर्द सहूँगा।
जीवन के सुखमय पल का,
कब तक राह लखूँगा।।१०।।

समय कभी न रुक किसी का,
समय न रुकने वाला ।
ये तो है प्रकृति की गति ,
ये नित चलने वाला।।११।।

दर्द- ए-तन्हाई का,
सबको सहना पड़ता ।
जीवन है संग्राम क्षेत्र,
सबको लड़ना पड़ता ।।१२।।

जो हार नहीं माना करते,
वो विश्व विजेता होते।
धर्म- अर्थ- काम -मोक्ष,
चारों का फल पाते।।१३।।

– रमापति मर्य

खुशियों के पल

रंगीन हंसी जीवन के पल,
हंसते-हंसते कट जाते।
वक्त भले हों लंबे लेकिन,
बिना टिके कट जाते ।।१।।

लंबी-लंबी रातें भी,
छोटी लगने लगतीं।
हंसी -खुशी के जीवन में,
कई मिसालें बनतीं।।२।।

प्यार -मोहब्बत जीवन में,
खुशियां भरते रहते।
नफरत की हर दीवारों को,
मिलकर तोड़ा करते।।३।।

आशा औ विश्वास बनाकर,
जो भी जीवन जीते।
कठिन चुनौती से भी वो,
घबराया न करते।।४।।

हंसी-खुशी का जीवन है,
हंसी -खुशी से जीओ।
हर कदमों पर खुशियों के,
रंगों में जीना सीखो।।५।।

अपने दम पर जो भी मानव,
जीवन जीया करते।
खुशियों के बाजारों में ,
मायूस नहीं वो रहते।।६।।

अपना जीवन जीवन है ,
जीवन का अर्थ समझता।
पराधीनता में जीवन का ,
अर्थ नहीं कुछ होता।।७।।

प्यार -मोहब्बत करने वाले,
प्यार -मोहब्बत करते।
प्यार- मोहब्बत के बल पर,
सबको अपना करते।।८।।

समय-समय पर जीवन में,
रंग बहुत दिख जाते।
कभी खुशी तो कभी गमों के ,
बादल छाया करते।।९।।

जिनकी आदत खुश रहने की,
हर स्थिति में खुश रहते ।
जिनकी आदत रोने की,
वो महलों में भी रोते।।१०।।

जीवन है अनमोल,
इसे मत व्यर्थ गंवाओ।
सही अर्थ में जीवन का,
मकसद दिखलाओ।।११।।

वक्त की रंगत बदलते ,
वक्त ने देखा ।
वक्त की रंगत कहीं,
बदरंग कहीं देखा।।१२।।

– रमापति मौर्य

प्यार की खुशबू

तू तो मेरे प्यार के नगमें,
तुझको गाया करता।
तेरे प्यारों की खुशबू में ,
जी भर झूमा करता।।१।।

गर्मी -सर्दी -वर्षा में भी,
कभी न भूला करता।
तू ही तो मेरा जीवन ,
ऐसा लगने लगता।।२।।

हर प्रकार से मेरे दिल पर,
तेरा राज चला है।
तुम्हीं हमारा जीवन हो,
ऐसा हमें लगा है।।३।।

हर पल तेरी याद हमें,
रह-रह के तड़पाती।
तेरी कदमों की आहट से,
दिल की धड़कन बढ़ती।। ४।।

कानों को अब पायल की ,
ध्वनि नहीं सुनाई देतीं।
औरों के पायल की ध्वनि से,
आतुरता बढ़ जाती।।५।।

ये भी कोई जीवन है ,
तड़प- तड़प के जीना।
मन उदास वीरान जिंदगी ,
मायूसी में जीना।।६।।

कभी- कभी मैं सोचा करता,
तेरे प्यार की बातें ।
कैसे रंग बदलता जीवन,
समय-समय की बातें ।।७।।

मौसम की रंगीन फिजायें,
हमें नहीं खुश करतीं ।
तन्हाई के पीड़ा को,
वो और बढ़ाया करतीं।।८।।

दुनियाँ से मैं लड़ के जीता,
लेकिन तुझसे हारा।
बिना अस्त्र के केवल प्यार से,
तुमने हमको मारा।।९।।

अब तो लगता तू ही जीवन ,
तू ही जीवन की सांसें।
तेरे बिन थमने लगती,
मेरे जीवन की सांसें।।१०।।

कहीं तेरा तो नहीं इरादा,
दिल भर के तड़पाना ।
प्रेम विरहा के पागल मन में,
प्रेम और भड़काना।।११।।

तन्हाई में प्यार की खुशबू,
निशदिन बढ़ती जाती।
याद तुम्हारी निशदिन आ के,
जी को खूब तड़पाती।।१२।।

– रमापति मौर्य

मत डरना

मत डरना कभी किसी से,
न्याय -धर्म पर चलना।
न्याय -धर्म को बना सारथी,
जीवन का रथ ले चलना।।१।।

बांधायें आयेंगी लेकिन ,
धैर्य कभी मत खोना।
दूने साहस से बांधाओं को,
पराजित करते जाना।।२।।

समय -समय पर बांधायें,
शक्ति परीक्षण करतीं।
मेरे आत्म विश्वासों को,
जी भर परखा करतीं।।३।।

बांधायें कुछ सबक सिखाने,
आया- जाया करतीं।
जीवन को मजबूती देने,
बांधायें आया करतीं।।४।।

लड़ने वाले जीता करते,
बांधायें मिट जातीं ।
नई-नई राहें जीवन की,
संघर्षों से खुल जातीं।।५।।

समय-समय पर बांधायें,
लिया परीक्षा करतीं ।
जीवन जीने की मजबूती,
बांधायें दे जातीं।।६।।

जीवन है संघर्ष पूर्ण,
संघर्ष हमेशा चलते।
जीवन के अंतिम सांसों तक,
संघर्षों से लड़ते।।७।।

लड़ना जिसने सीख लिया ,
वो विजय एक दिन पायेगा।
हार के बदले विजय उसे,
संघर्षों से मिल जायेगा।।८।।

जीवन में सुख -दुःख का,
आना-जाना रहता ।
ऐसा कोई बचा नहीं ,
जो केवल सुख में जीता।।९।।

मान-शान- सम्मानों से,
मान बढ़ाया करता ।
संघर्षों से हर मंजिल पर,
विजय श्री हासिल करता।।१०।।

संघर्षों से डर कर के,
जो राहें बदला करते।
जीवन की हर मंजिल पर,
वो पांव पटकते रहते।।११।।

जीवन में सुख- दु:ख के फेरे,
समय -समय पर लगते ।
कभी खुशी तो कभी गमों के,
बादल आया करते।।१२।।

जीवन में सौभाग्य बहुत हैं ,
जी भर जीवन जीओ।
सारे गम को लात मार कर,
खुशी बुलाकर जीओ।।१३।।

– रमापति मौर्य

कान्हा की बेचैनी

हे राधे ! तेरी याद हमें,
दिनरात सताया करती है।
सारी सुख- सुविधाएं पर,
वीरान बनाया करती है ।।१।।

अष्ट सिद्धि -नौ निधियां राधे ,
तुझे भुला न पाई।
पूर्ण ब्रह्म जग कहे हमें ,
लेकिन विकल बनाई।।२।।

हे राधे ! तेरी यादों में,
हम खोये -खोये रहते हैं।
किंकर्तव्यविमूढ़ बना,
सब ज्ञान भुलाया करते हैं।।३।।

बचपन भूला गोकुल भूला ,
तुम्हें भुला ना पाया।
खोया -खोया तेरा कान्हा ,
केवल दुःख ही पाया ।।४।।

कठिन परीक्षा तेरी- मेरी,
दुःख ही दुःख अब मिलते।
दुःख के बाद सुख की बातें,
घटित नहीं अब दिखते।।५।।

– रमापति मौर्य

बीता वक्त

बीता वक्त न वापस आये,
केवल पछताना पड़ता।
अपनी ही नादानी पर ,
केवल रोना पड़ता ।।1।।

वक्त बड़ा कीमती होता ,
कभी न वापस आया।
लेकिन अतीत की बातों को,
कभी भुला न पाया।।2।।

जिसने वक्त की कीमत ,
जीवन में पहचानी है।
वक्त उसे पहचान दिला,
कीमत अपनी दिखलाई है।।3।।

अगर चाहते सुखमय जीवन,
मृत्यु लोक में हो जाये।
सावधान हर पल रह के,
समय की कीमत जानी जाये।।4।।

बीता वक्त कभी किसी का ,
नहीं दुबारा आता।
मगर हजारों सीखों से,
सीख हजारों दे जाता।।5।।

हर क्षण का महत्व बहुत है,
पैसों से नहीं खरीदा जाता।
प्राण पखेरू जिनके उड़ते,
क्षण भर नहीं ठहर पाता।।6।।

वक्त की कीमत जिसने समझा,
वक्त उसे समझा करता।
समय-समय पर मान- शान में,
चार चांद लगाया करता।।7।।

बीता वक्त जीवन में,
यादों में जिंदा रहते।
समय-समय पर घटनाओं को,
वक्त पुकारा करते हैं।।8।।

कभी बचपना कभी जवानी,
कभी बुढ़ापा आता।
जीवन के संग्राम क्षेत्र में,
भला -बुरा सब होता।।9।।

समय की सत्ता के आगे,
वीरों को झुकने पड़ते।
बंद कटघरे में शेरों को,
कुत्ते डांटा करते।।10।।

वक्त भला है वक्त बुरा है ,
वक्त बताया करता।
अपनों और परायों में,
पहचान कराया करता।।11।

– रमापति मौर्य

परदेसी पिया

जाते हो परदेस पिया तो ,
जाते ही खत लिखना ।
कब तक आओगे वापस ,
आने की तिथि लिखना ।।१।।

तेरे आने की आशा में,
थामें सांस रहूंगी ।
तुम्हें बसा कर के नैनों में,
दर्शन करती रहूंगी।।२।।

वैसे तो पिया याद तुम्हारी,
निशदिन हमें सताये।
दिन तो ऐसे- वैसे बीते ,
पर रात बहुत तड़पाये।।३।।

यदि परह होते उड़ गगन में,
पास तेरे आ जाती।
अपने मन की सारी बातें,
आकर तुम्हें सुनाती।।४।।

तेरी बाहों में सो करके
सुबह-सुबह आ जाती।
बिना बतायें चुपके से ,
तुझसे नित मिल आती।।५।।

तुझसे बिछुड़ना जीवन क्या,
जैसे पानी बिनु मीन ।
तड़प-तड़पकर मैं मर जाती,
जैसे मरती मीन।।६।।

सुख- दुःख जीवन के पहलू हैं,
आते जाते रहते।
सुख -दु:ख में ही प्यार पल के,
जीवन आगे बढ़ते।।७।।

आओ जल्दी नजर बिछाये,
तेरी योगिन लखती।
तेरे आने की खुशियों में,
नींद नहीं अब लगती।।८।।

सावन बीते भादौं बीते ,
बीत गई दिवाली।
आगे होली पर आना है,
बात न भूली दीपावली।।९।।

— रमापति मौर्य

प्यारी बच्ची

सारी खुशियां सारी शोहरत,
बच्ची को मिल जाये।
शुभ आशीष हमारी है ,
भू-अम्बर में छा जाये।।१।।

मातपिता का नाम हमेशा,
दुनियाँ में फैलाये।
मातपिता उसके नाम से,
अपना नाम बढ़ायें।।२।।

नन्ही- मुन्नी प्यारी बच्ची,
सबके मन को भाये।
जीवन के शुभ प्रभात में,
मन ही मन मुस्काये।।३।।

दादी -दादा, नानी -नाना,
मौसी खुशी मनातीं ।
बुआ की तो बात न पूछो,
रह-रह के इतरातीं ।।४।।

मम्मी -पापा की खुशियों की ,
कोई न सीमा दिखती।
देख-देख बच्ची को माँ की,
सारी पीड़ा मिटती ।।५।।

पापा उसको बार-बार,
गोदी में उठाया करते ।
अपनी ममता बच्ची पर,
जी भर लुटाया करते ।।६।।

नानी तो नातिन खातिर,
बेटी के घर रहतीं ।
बेटी -नातिन की देखभाल,
नानी जी भर करतीं।।७।।

नाना जी की बात न पूछो ,
खुशियों में झूमा करते।
बिना नानी के नाना,
खाना बना खाया करते ।।८।।

बार-बार नानी को नाना ,
एक बात समझाये।
देखभाल में कोई कसर ,
मेरे कारण न रह पाये।।९।।

जितना चाहे रहो वहाँ,
सेवा नातिन की करना।
अगर जरूरत हो मेरी,
तो हमें शीघ्र बुला लेना ।।१०।।

सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ भेंट ,
बेटी को ईश्वर माना,
जिनके सम्मुख यम ने भी,
बेटी से हारी माना।।११।।

– रमापति मौर्य

श्रीमती सुनीता देवी मौर्य

इटावा, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : **स्व. श्री गुरु प्रसाद मौर्य।**
- माता जी का नाम : **स्व. श्रीमती राम दुलारी देवी।**
- पति का नाम : **श्री रमापति मौर्य।**
- शैक्षणिक योग्यता : **इंटरमीडिएट।**
- पदनाम : **लेखिका, कवयित्री एवं सुगृहिणी ।**
- साहित्यिक अनुभव : विगत **03** वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- **नदियों की राहें।**
- **आजादी की कीमत।**
- **प्रभात वर्णन।**

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

वर्षा ऋतु

घन बरसे चहुँ ओर,
सखी क्या सावन आया?
वृष्टि होत घनघोर,
सखी न साजन आया।।१।।

सखियन के साजन घर आये,
सखियां खुशी मनाये।
मैं विरहिन पति आश लगा के,
केवल मन दुःख पाये।।२।।

घन बरसे चहुँओर,
रह –रह मन अकुलाये।
प्यासी धरती तृप्त हो गई,
मेरी प्यास न बुझ पाये।।३।।

– सुनीता देवी मौर्य

स्त्री मन की गहराई

आओ !हम सब एक साथ,
स्त्री का मन समझें।
कितनी है गहराई मन की,
अपने मन से समझें ।।१।।

हर रूपों में स्त्री के ,
मन की गहराई दिखती ।
प्यार -मोहब्बत की बातें,
पुरुषों से अधिक दिखती ।।२।।

स्त्री हैं सम्मान पुरुष का,
पुरुष नहीं समझा करते।
कभी-कभी तो पशु से बदतर,
वे व्यवहार किया करते।।३।।

हम पुरुषों के गुलशन में,
स्त्री सुगंध भरा करतीं।
परिवारों की जिम्मेदारी,
अपने हाथ लिया करतीं।।४।।

तन- मन अर्पण करने वाली ,
नई ज्योति फैलाती।
वीरान पड़े पतझड़ जग में,
मुस्कान नई भर देती।।५।।

कोमलता की क्या मिसाल ,
कोई कवि दे पायेगा ।
मन की गहराई का हिसाब,
क्या कभी कोई कर पायेगा?।६।।

हर मोर्चों पर लड़ी और ,
इक नया मुकाम बनाईं।
अपने मन की गहराई को,
जबरन नहीं दिखाईं।। ७।।

स्त्री का मन है निर्मल,
पर पुरुषों का न दिखता।
भेदभाव मिट जाये धरा से,
बार-बार मन हंसता।८।।

पुरुषों के उपवन का मालिन,
स्त्री होया करतीं ।
वहीं पुरुष के उपवन को,
जी भर महकाया करतीं।।९।।

– सुनीता देवी मौर्य

मैं नारी हूँ

मैं नारी हूं उपहार सृष्टि की ,
मेरी पहचान अलग है।
मैं फूल सी हूँ कोमल ,
मेरी मुस्कान अलग है।।१।।

वैसे तो ममता की सागर,
पर रण में रणचण्ड़ी सी हूँ ।
दुश्मन को सबक सिखाने में,
लक्ष्मीबाई जैसी हूँ ।।२।।

मैं कभी नहीं घबराया करती,
धरती जैसा रखती धैर्य ।
लाख मुसीबत आये लेकिन,
नहीं खोया करतीं हूँ धैर्य।।३।।

सृष्टि के उत्थान- पतन में
सहयोगी बनती हूँ मैं।
मैं नर बड़ी हूं नारी ,
हर नर को जन्म देती हूँ मैं।।४।।

धर्म- अर्थ- काम -मोक्ष,
चारों पुरुषार्थ दिया करती।
हर सिद्धि में अहम भूमिका,
निश्चित मेरी होती।।५।।

जब चाहूँ निर्धन कर दूँ,
जब चाहूँ धनवान।
ये दोनों मेरी मुट्ठी में,
मैं नारी हूँ महान।।६।।

मेरी माया आज तलक,
न कोई जान पाया।
यहां तक की यम भी,
मुझे से धोखा खाया।।७।।

सुर-नर-मुनि सब मेरे पीछे,
चक्कर कटा करते।
छोड़- छोड़ कर सिद्धि लाखों,
पीछे भागा करते।।८।।

मैं नारी हूँ नारी की,
पहचान न खोने दूंगी।
नारी की पहचान बहुत,
कभी न मिटने दूंगी।।९।।

– सुनीता देवी मौर्य

खनकती चूड़ियां

चूड़ियों की खनक से,
मधुर संगीत निकलती।
अपने और पराये को,
घायल करती रहतीं ।।१।।

हर सुहागिन पहन चूड़ियां
सौभाग्यवती समझती ।
बड़ी हिफाजत से चूड़ी,
महिलायें रखा करतीं।।२।।

हर मौसम में नई चूड़ियां,
महिलायें पहना करतीं ।
चूड़ियों की संगीत मधुर,
सबै सुनाया करतीं।।३।।

कभी-कभी तो खनक चूड़ियां ,
शोर मचाया करतीं।
जाने कितने दिल को गहरा,
जख्म दिया करतीं ।।४।।

जैसी साड़ी वैसी चूड़ी ,
अक्सर पहना करतीं।
कई -कई सेट चूड़ी के ,
घर पर रखा करतीं।।५।।

हरी- हरी साड़ी पर ,
हरी -हरी चूड़ियां।
सावन में पहना करतीं,
महिलायें हरी चूड़ियां।।६।।

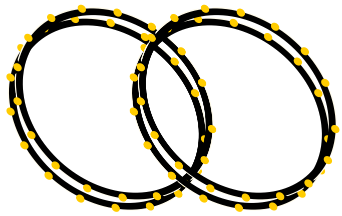

शादी -व्याह शुभ अवसर पर,
पहनती सुहागिन चूड़ियां ।
सुहागिन की निशानी होती ,
कलाई की चूड़ियां ।।७।।

बिना चूड़ी सुन लगती ,
महिलाओं की कलाईयां ,
शोभा कुछ क्षीण लगे,
खाली अगर कलाईयां ।।८।।

रूप- रंग ,रंग -रंगत,
खूब गातीं चूड़ियां।
गाते -गाते टूट जातीं ,
कभी-कभी चूड़ियां।।९।।

चूड़ियां की खनक से,
जाग जाते साजना।
प्रीत मन में खूब जगाये,
खनक-खनक साजना।।१०।।

मान-शान खूब बढ़ायें,
नई -नई चूड़ियां।
सावन में हरी दिखतीं ,
पहने हरी चूड़ियां।।११।।

– सुनीता देवी मौर्य

हसरतें अधूरी हैं

हसरतें अधूरी थी पहले ,
हसरतें अधूरी हैं अब भी
लाख कोई कोशिश कर ले,
हसरतें अधूरी ही रहतीं।।१।।

राजा- रंक- फकीर कोई हो,
सब में हसरत होती।
हसरत पूरा करते-करते,
जीवन की छुट्टी होती।।२।।

फिर भी सारी हसरत अब तक,
नहीं पूरा हो पाया।
कुछ पूरा पर कुछ अधूरा ,
हसरत सब ने पाया।।३।।

किसी की हसरत पुत्र प्राप्ति,
किसी की धन की होती।
किसी-किसी की शोहरत,
पाने की हसरत होती।।४।।

नित -नूतन कई हसरतें ,
आया- जाया करतीं ।
मगर किसी की सारी हसरत,
कभी न पूरा होतीं।।५।।

– सुनीता देवी मौर्य

बेटी का जन्म

भोली- भाली सूरत तेरी,
मन को मोहा करती।
छोटे-छोटे हाथ- पैर को ,
खूब हिलाया करती ।।१।।

दिन में सोती रात में जगती,
खेल यही किया करती।
लेकिन मम्मी- नानी उसको,
जी भर प्यार किया करतीं ।।२।।

हम सब का आशीष यही,
नवजात बालिका स्वस्थ रहे।
उसके मोहक मुस्कानों से,
सबकी मुस्कान बनी रहे ।।३।।

जिनके भाग्य उदय होते,
बेटी जन्मा करतीं।
शक्ति स्वरुपा आदि शक्ति,
हर वैभव भर देतीं।।४।।

हर प्रकार से बेटी मंगल,
मात पिता की करतीं ।
पुत्र से अधिक बेटी,
देखभाल करतीं।। ५।।

दो कुल की मर्यादा की,
जिम्मेदारी होती।
बेटी ही है जिससे ऐसी,
आशा सब को होती।।६।।

बेटी से ही माँ की कोख,
पावन कोख हुआ करती।
बेटी घर की शोभा होती,
जिनके घर जन्मा करती।।७।।

रहे सदा खुशहाल बच्ची,
फूलों सी मुस्कान रहे।
अष्टसिद्धि -नवनिधियां उसके,
रक्षा में तैनात रहें।।८।।

धन्य -धन्य हो गया धन्य,
बेटी कुल धन आई।
अपने सौरभ से बेटी,
सारे कुल को महकाई।।९।।

– सुनीता देवी मौर्य

धन्यवाद

Mahakaal Ki Kripa Se
Sab Kaam Ho Raha Hai

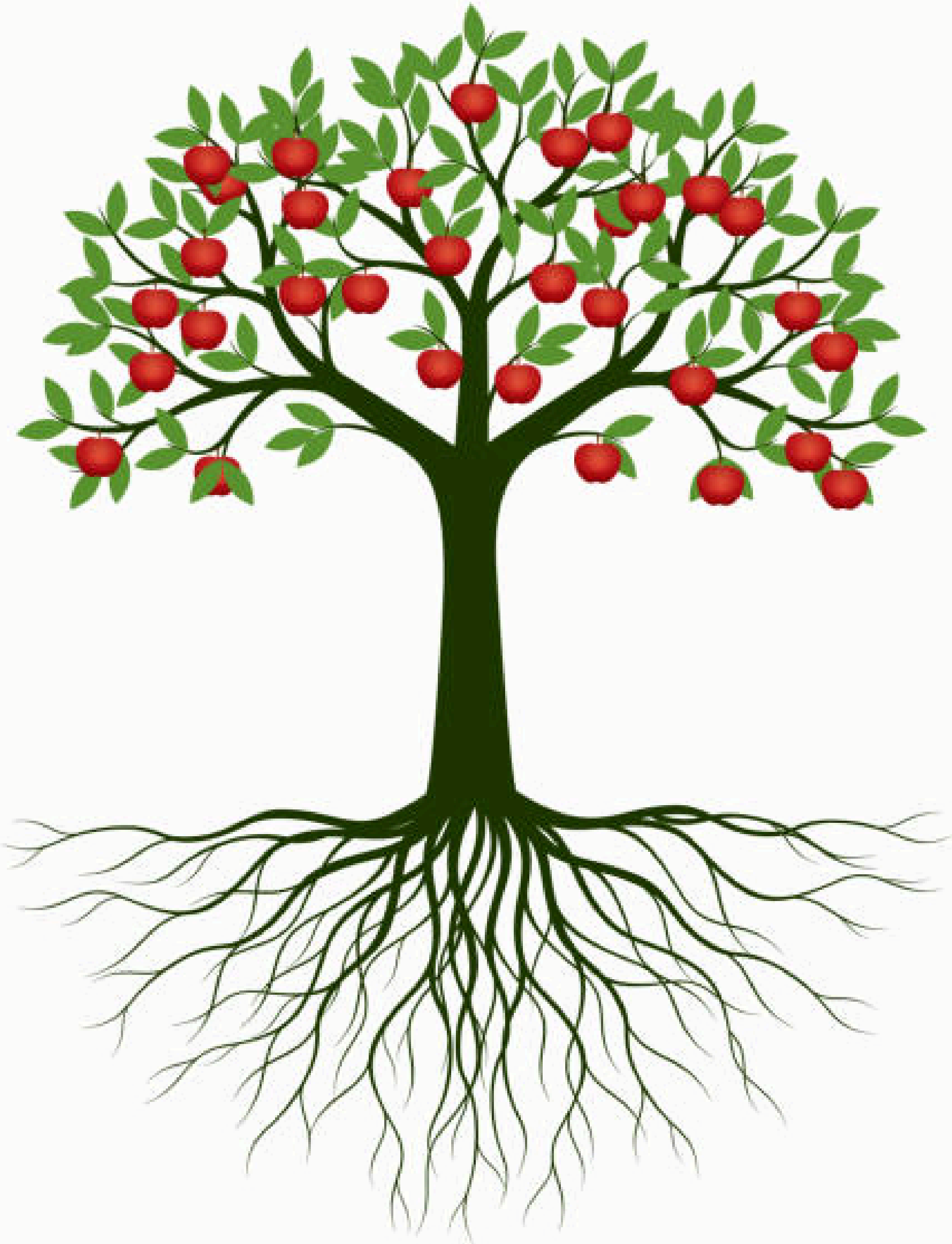

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी
फुसरो, बोकारो, झारखंड
संपर्क : 8935857296
www.sahityasangambooks.in

ISBN: 978-8-19864-912-6
9 788198 649126

मूल्य : ३५०/–